



Luv Bansal

15 Nov 1990

01:11 PM

Delhi

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 121286901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 15/11/1990
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 13:11:00 घंटे
इष्ट _____: 16:08:17 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:49:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:15:29 घंटे
साम्पातिक काल _____: 16:26:24 घंटे
सूर्योदय _____: 06:43:41 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:27:36 घंटे
दिनमान _____: 10:43:55 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 28:56:47 तुला
लग्न के अंश _____: 03:49:33 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: चित्रा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: आयुष्मान
करण _____: विष्टि
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: री-रीतेश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1912	कार्तिक	24
पंजाबी	संवत : 2047	कार्तिक	30
बंगाली	सन् : 1397	कार्तिक	29
तमिल	संवत : 2047	आइपसी	30
केरल	कोल्लम : 1166	तुलम	29
नेपाली	संवत : 2047	कार्तिक	30
चैत्रादि	संवत : 2047	मार्गशीर्ष	कृष्ण 13
कार्तिकादि	संवत : 2047	कार्तिक	कृष्ण 13

पंचांग

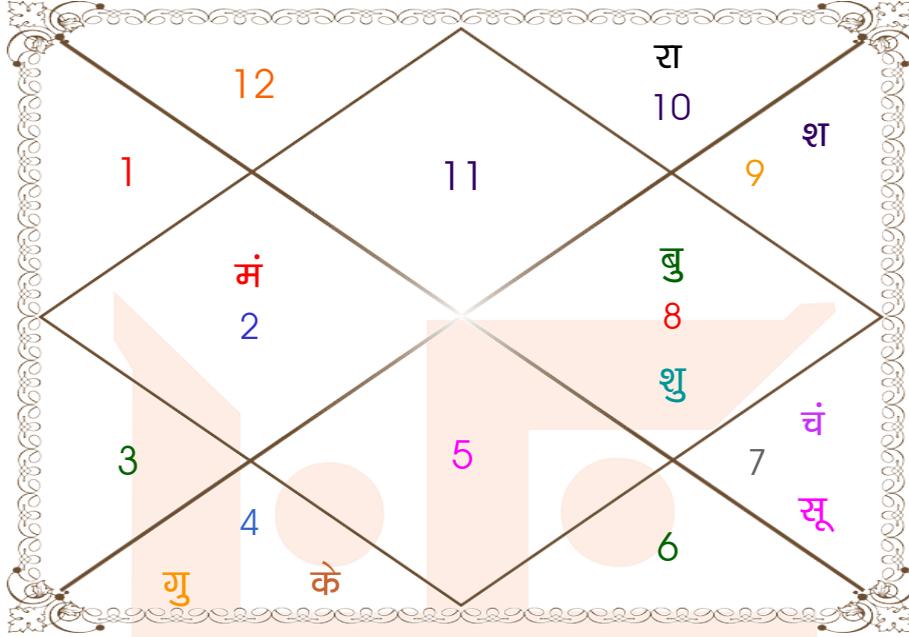
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 10:18:07
जन्म तिथि _____ : 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : चित्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 13:56:35 घंटे
जन्म योग _____ : चित्रा
सूर्योदय कालीन योग _____ : आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____ : 21:54:43 घंटे
जन्म योग _____ : आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 10:18:07 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 63:41:00
भभोग _____ : 65:34:56
भोग्य दशा काल _____ : मंगल 0 वर्ष 2 मा 12 दि

घात चक्र

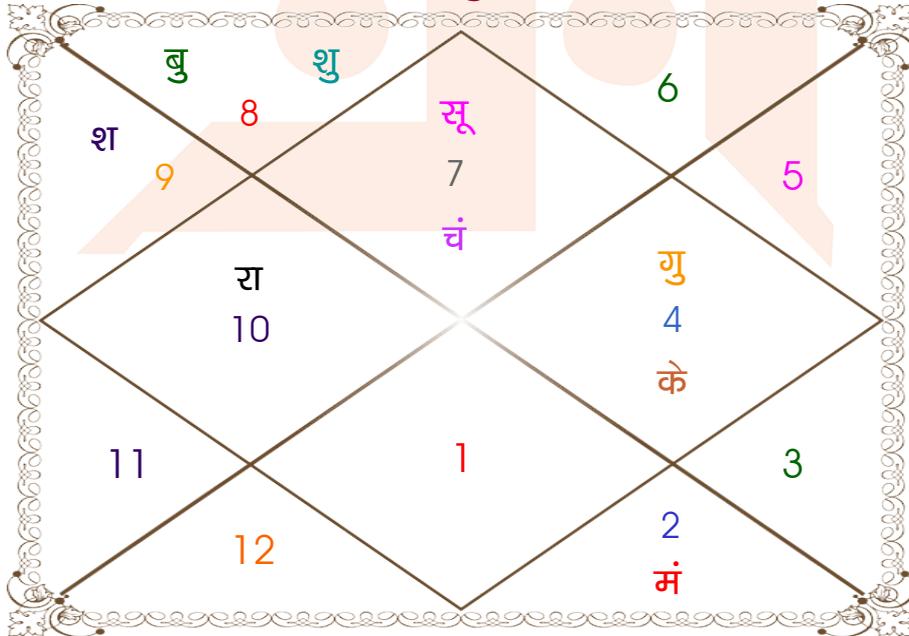
मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

		मं	
ल			के गु
रा			
श	शु बु	चं सू	

लग्न कुण्डली

मं		
		ल
के गु		रा
	सू चं	श बु शु

विंशोत्तरी
मंगल 0वर्ष 2मा 12दि
मंगल

15/11/1990

29/01/2104

मंगल	28/01/1991
राहु	27/01/2009
गुरु	27/01/2025
शनि	28/01/2044
बुध	27/01/2061
केतु	28/01/2068
शुक्र	28/01/2088
सूर्य	27/01/2094
चन्द्र	29/01/2104

योगिनी

मंगला 0वर्ष 0मा 10दि
मंगला

25/11/2025

26/11/2026

मंगला	05/12/2025
पिंगला	26/12/2025
धान्या	25/01/2026
भ्रामरी	07/03/2026
भद्रिका	27/04/2026
उल्का	26/06/2026
सिद्धा	05/09/2026
संकटा	26/11/2026

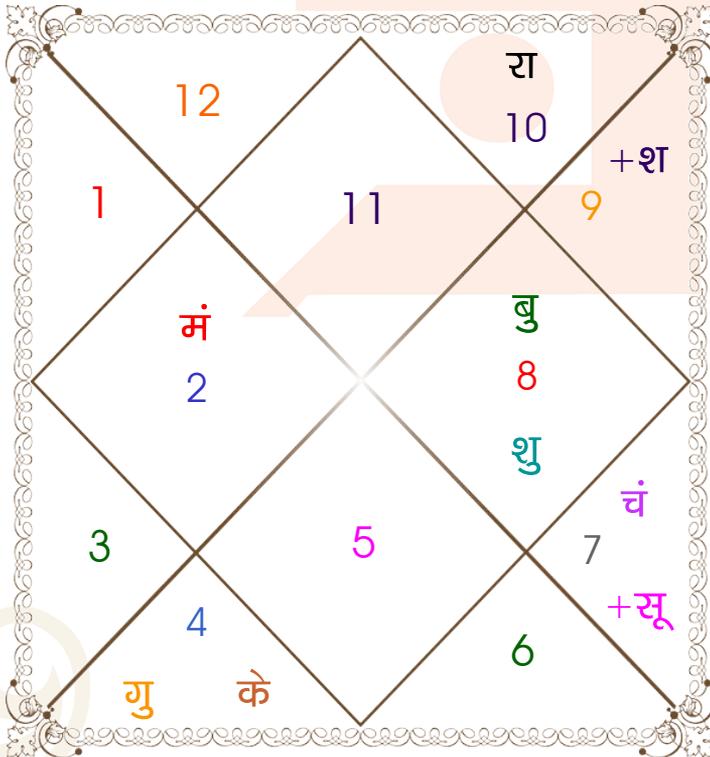
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	03:49:33	473:36:32	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	---
सूर्य			तुला	28:56:47	01:00:27	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	नीच राशि
चंद्र			तुला	06:16:58	12:07:54	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	सम राशि
मंगल	व		वृष	16:13:01	00:20:13	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	शनि	सम राशि
बुध			वृश्चि	12:46:24	01:29:42	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	मंगल	सम राशि
गुरु			कर्क	19:30:10	00:02:53	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	शुक्र	उच्च राशि
शुक्र	अ		वृश्चि	02:22:49	01:15:20	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	सम राशि
शनि			धनु	27:12:09	00:04:47	उत्तराषाढा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	सम राशि
राहु	व		मक	06:58:33	00:12:36	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	बुध	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	06:58:33	00:12:36	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	बुध	मित्र राशि
हर्ष			धनु	13:24:16	00:02:48	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
नेप			धनु	18:48:16	00:01:37	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
प्लूटो			तुला	24:10:24	00:02:25	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
दशम भाव			वृश्चि	14:37:05	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	राहु	--

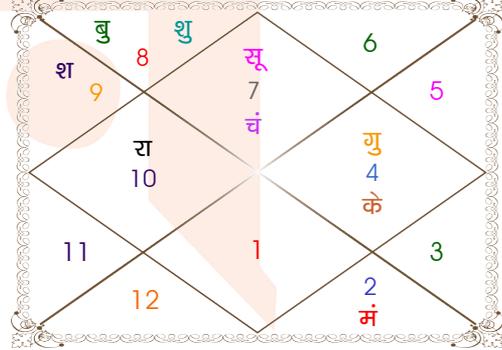
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:43:59

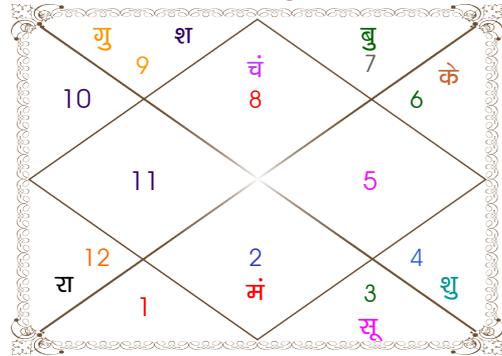
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मकर 20:37:29	कुम्भ 03:49:33
2	कुम्भ 20:37:29	मीन 07:25:24
3	मीन 24:13:19	मेष 11:01:15
4	मेष 27:49:10	वृष 14:37:05
5	वृष 27:49:10	मिथुन 11:01:15
6	मिथुन 24:13:19	कर्क 07:25:24
7	कर्क 20:37:29	सिंह 03:49:33
8	सिंह 20:37:29	कन्या 07:25:24
9	कन्या 24:13:19	तुला 11:01:15
10	तुला 27:49:10	वृश्चिक 14:37:05
11	वृश्चिक 27:49:10	धनु 11:01:15
12	धनु 24:13:19	मकर 07:25:24

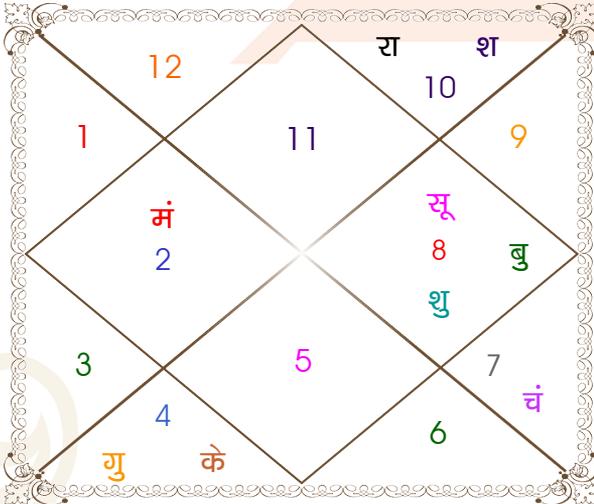
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	03:49:33
2	मीन	14:48:09
3	मेष	18:12:04
4	वृष	14:37:05
5	मिथुन	08:08:19
6	कर्क	02:50:37
7	सिंह	03:49:33
8	कन्या	14:48:09
9	तुला	18:12:04
10	वृश्चिक	14:37:05
11	धनु	08:08:19
12	मकर	02:50:37

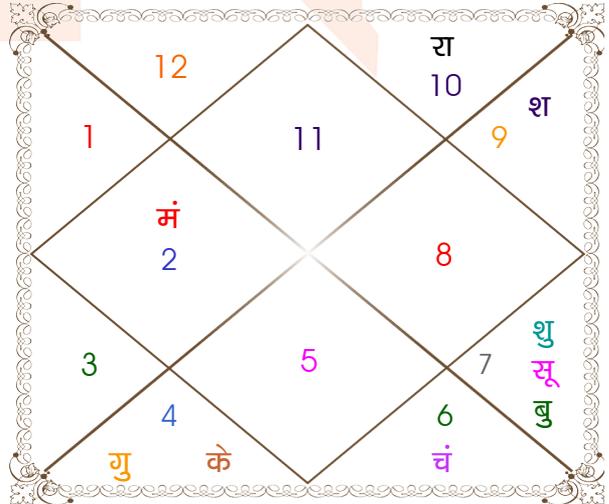
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



भाव कुंडली



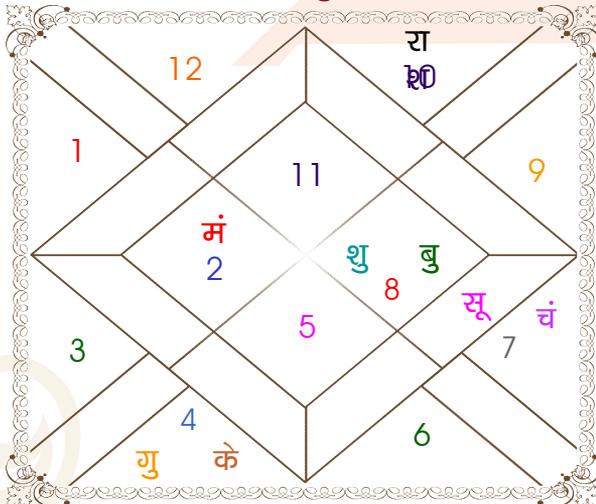
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	मृत	भीत	गमन	1.05	72 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	कुमार	शान्त	शयन	1.60	27 %
मंगल	मातृ	भातृ	युवा	शक्त	गमन	1.00	63 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	युवा	निपीदित	शयन	1.70	22 %
गुरु	भातृ	धन	कुमार	दीप्त	कौतुक	19.31	40 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	मृत	विकल	गमन	0.79	45 %
शनि	अमात्य	आयु	मृत	निपीदित	आगम	1.57	58 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	मुदित	गमन	0.00	3 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	मुदित	गमन	0.00	3 %
कुल						27.01	

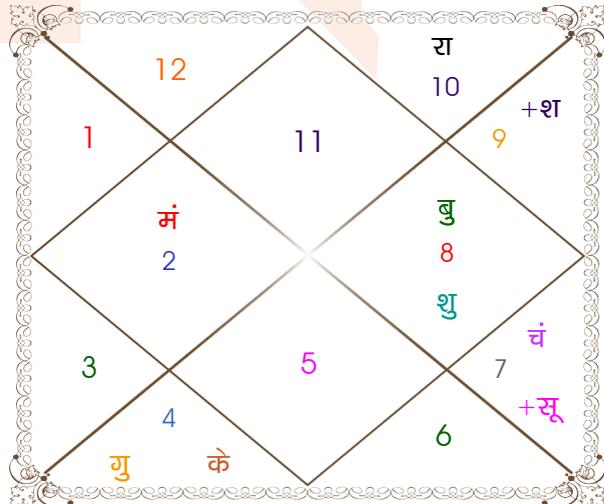
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

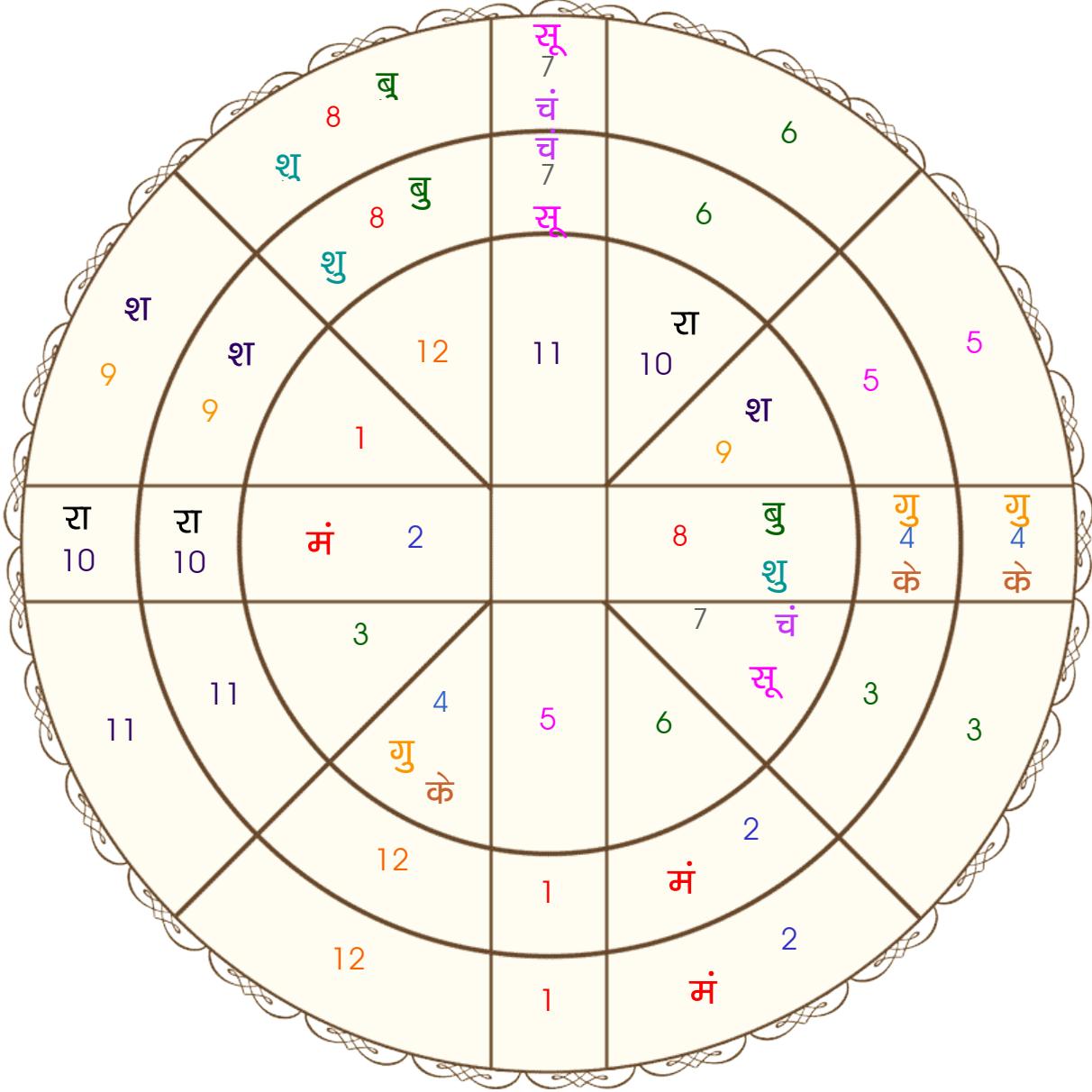
चलित कुंडली



लग्न-चलित



सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

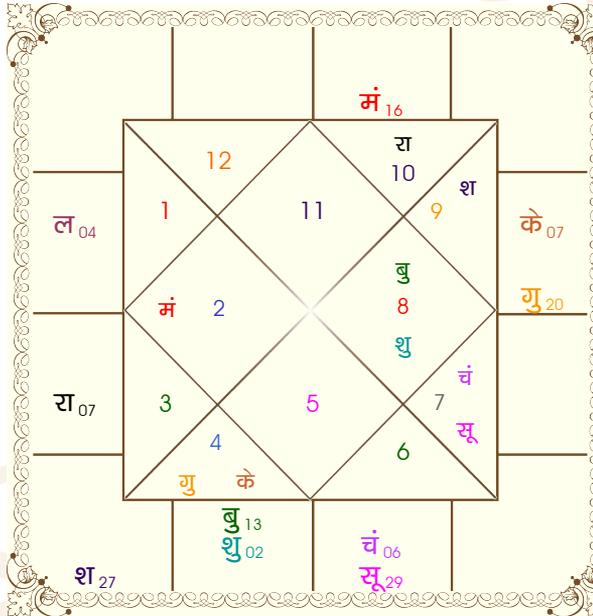
भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 1 मास 22 दिन

ग्रह					निरयण भाव				
ग्रह	व	राशि	अंश	रा न अं. प्र.	भाव	राशि	अंश	रा न अं. प्र.	
सूर्य		तुला	29:03:13	शुक्र गुरु सूर्य गुरु	1	कुंभ	03:55:59	शनि मंगलशुक्र	गुरु
चंद्र		तुला	06:23:23	शुक्र मंगलचंद्र केतु	2	मीन	14:54:35	गुरु शनि गुरु	गुरु
मंगल	व	वृष	16:19:26	शुक्र चंद्र शनि केतु	3	मेष	18:18:29	मंगलशुक्र राहु	राहु
बुध		वृश्चि	12:52:50	मंगलशनि मंगलचंद्र	4	वृष	14:43:31	शुक्र चंद्र गुरु	केतु
गुरु		कर्क	19:36:36	चंद्र बुध शुक्र शुक्र	5	मिथु	08:14:45	बुध राहु राहु	शुक्र
शुक्र		वृश्चि	02:29:14	मंगलगुरु राहु बुध	6	कर्क	02:57:02	चंद्र गुरु राहु	सूर्य
शनि		धनु	27:18:34	गुरु सूर्य सूर्य शुक्र	7	सिंह	03:55:59	सूर्य केतु चंद्र	राहु
राहु	व	मक	07:04:58	शनि सूर्य केतु शुक्र	8	कन्या	14:54:35	बुध चंद्र गुरु	शुक्र
केतु	व	कर्क	07:04:58	चंद्र शनि बुध शनि	9	तुला	18:18:29	शुक्र राहु चंद्र	राहु
हर्ष		धनु	13:30:42	गुरु शुक्र शुक्र शुक्र	10	वृश्चि	14:43:31	मंगलशनि राहु	चंद्र
नेप		धनु	18:54:41	गुरु शुक्र राहु शनि	11	धनु	08:14:45	गुरु केतु गुरु	बुध
प्लूटो		तुला	24:16:50	शुक्र गुरु बुध शुक्र	12	मक	02:57:02	शनि सूर्य गुरु	राहु

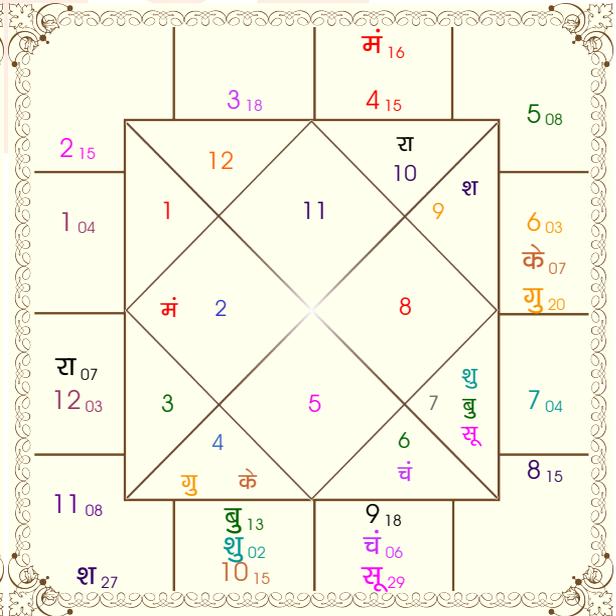
के.पी. अयनांश : 23:37:34

फॉरच्युना : मकर 11:16:09

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध- शनि- केतु-
2	सूर्य- गुरु- शुक्र-
3	चंद्र- मंगल-
4	चंद्र, मंगल, शुक्र-
5	बुध- गुरु-
6	सूर्य, चंद्र- मंगल- गुरु, शुक्र, केतु,
7	सूर्य- शनि- राहु-
8	चंद्र, मंगल, बुध- गुरु-
9	सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु,
10	चंद्र- मंगल-
11	सूर्य- बुध, गुरु- शुक्र- शनि, केतु,
12	बुध- शनि- राहु, केतु-

ग्रह कारकत्व

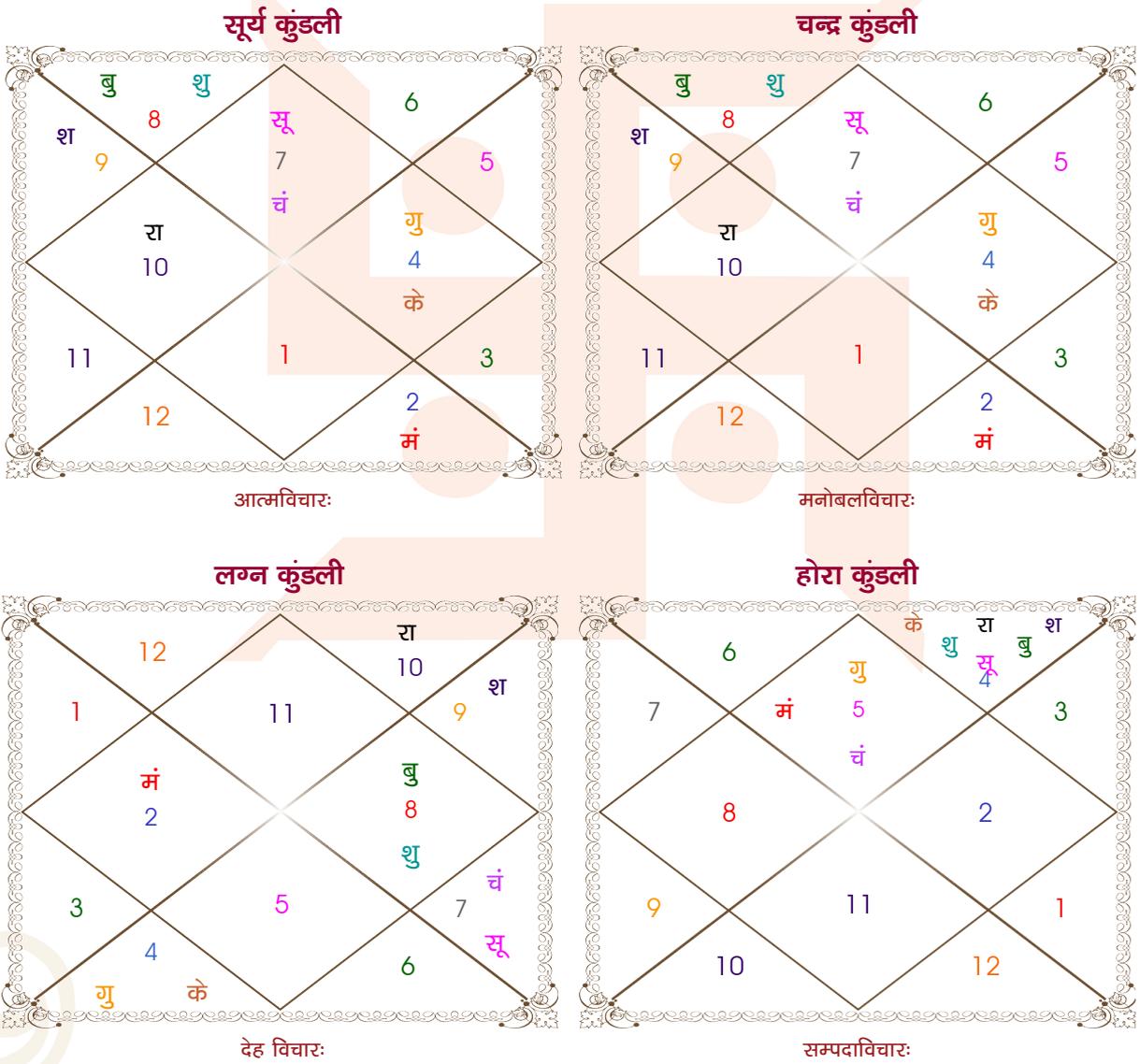
ग्रह	भाव
सूर्य	2- 6, 7- 9, 11-
चंद्र	3- 4, 6- 8, 10-
मंगल	3- 4, 6- 8, 10-
बुध	1- 5- 8- 9, 11, 12-
गुरु	2- 5- 6, 8- 9, 11-
शुक्र	2- 4- 6, 9, 11-
शनि	1- 7- 9, 11, 12-
राहु	7- 9, 12,
केतु	1- 6, 11, 12-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

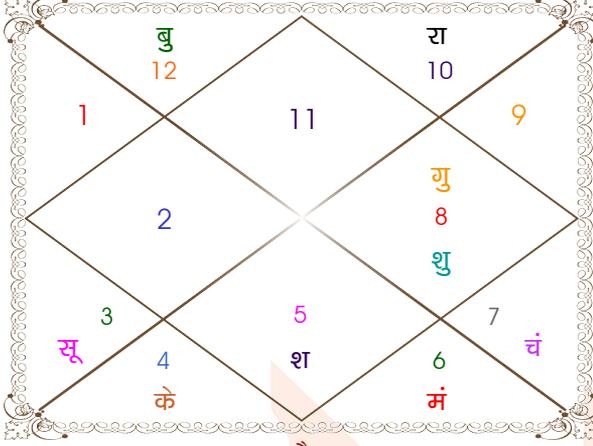
षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



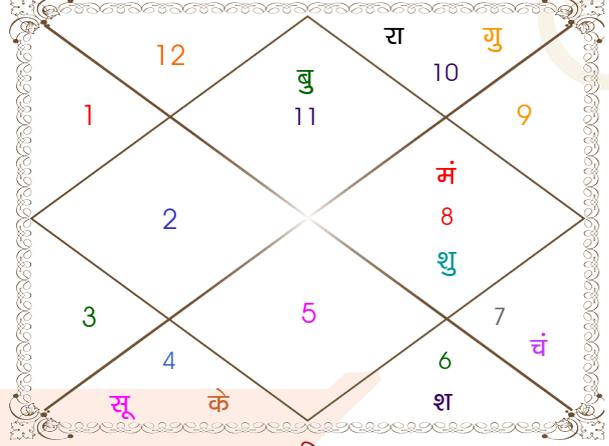
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



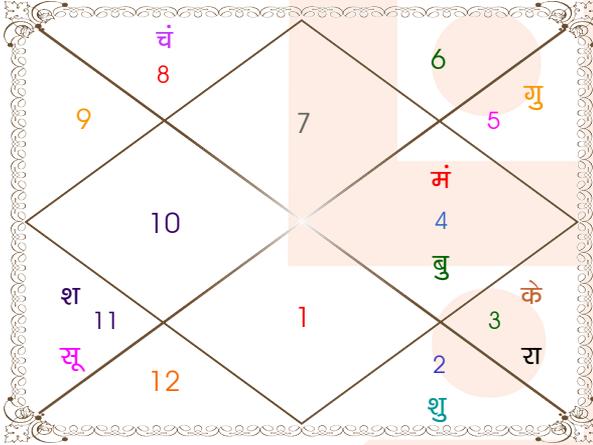
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



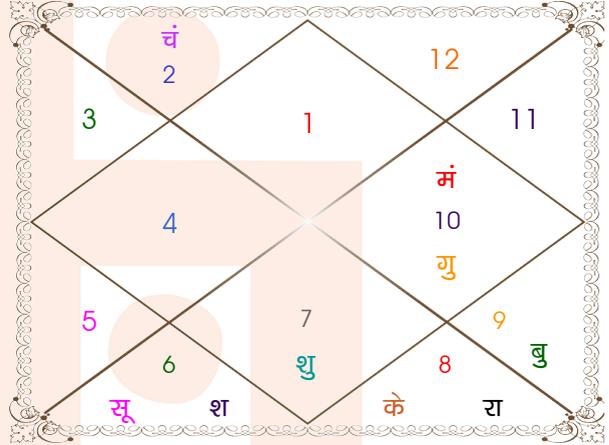
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



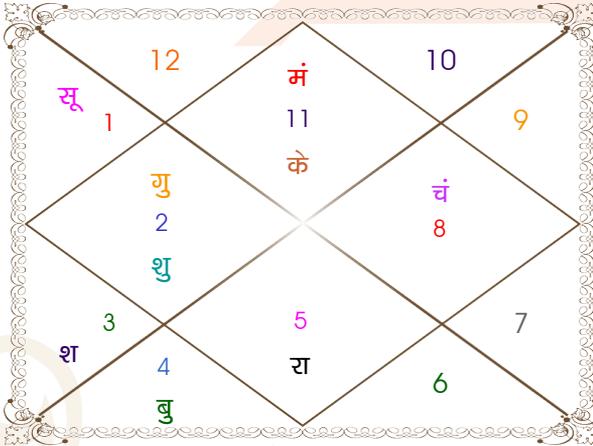
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



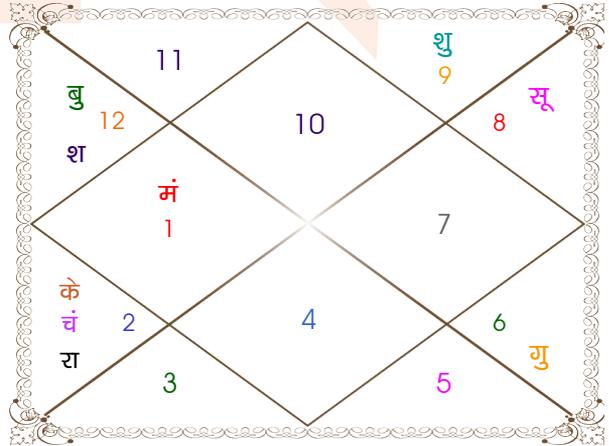
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

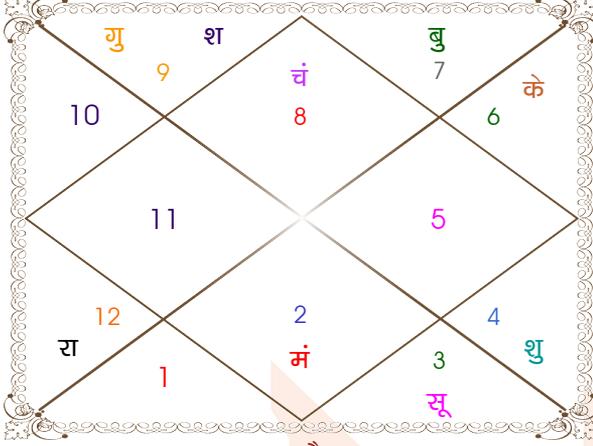
अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

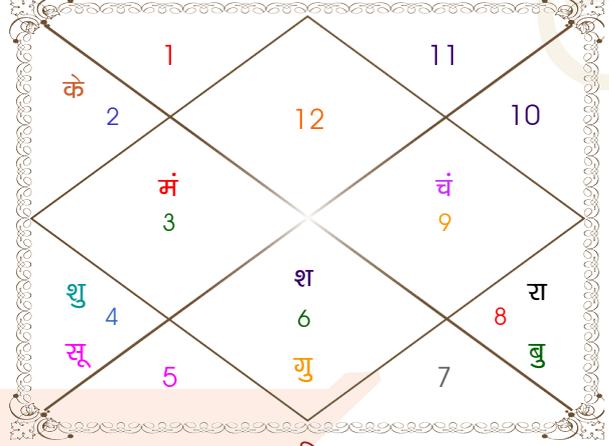
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



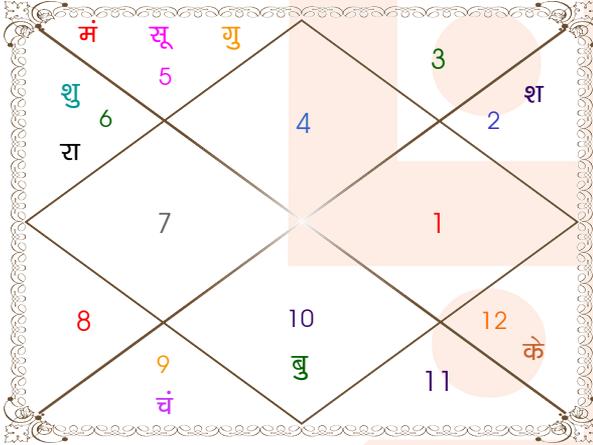
कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली



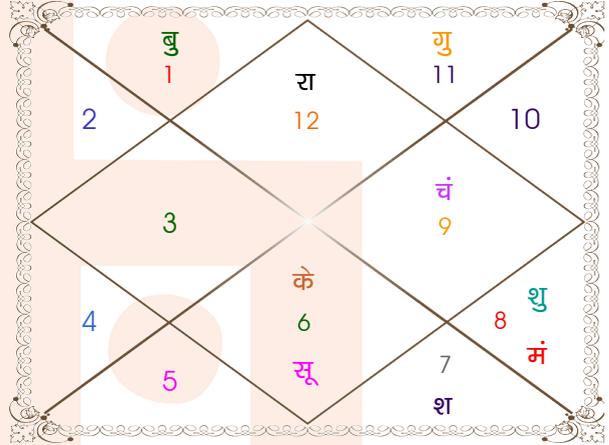
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



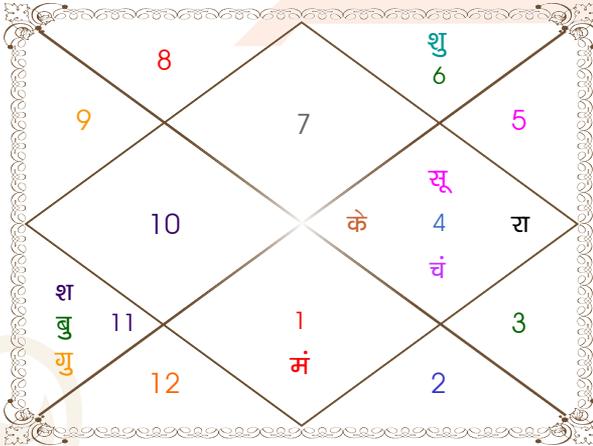
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



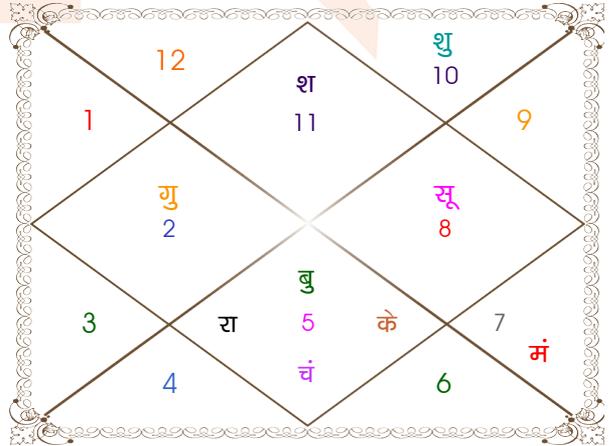
पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

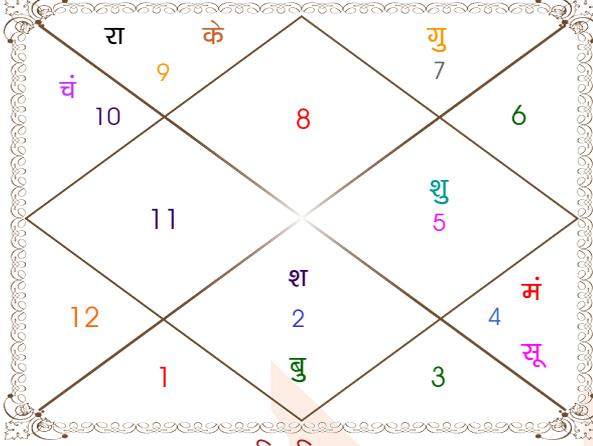
विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

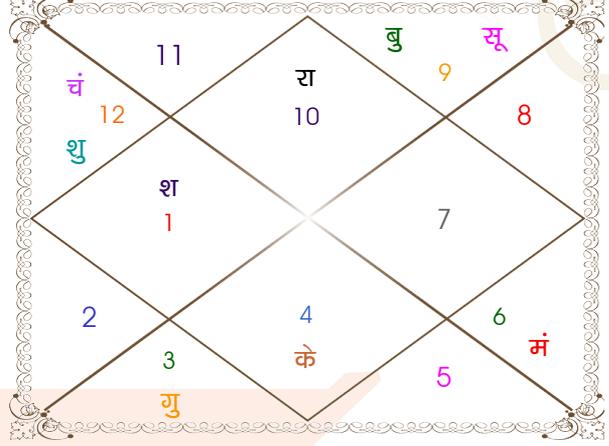
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशश कुंडली



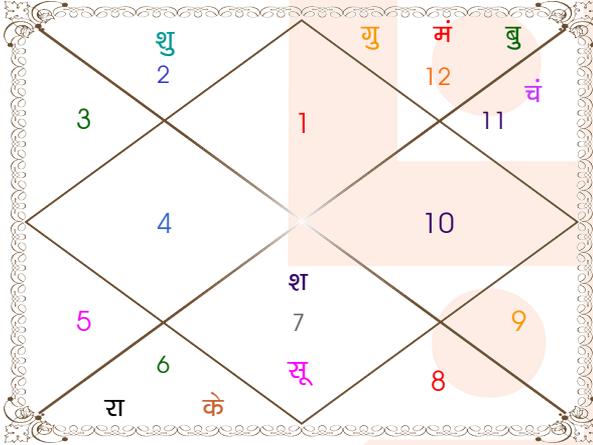
विद्याविचारः

सप्तविंशश कुंडली



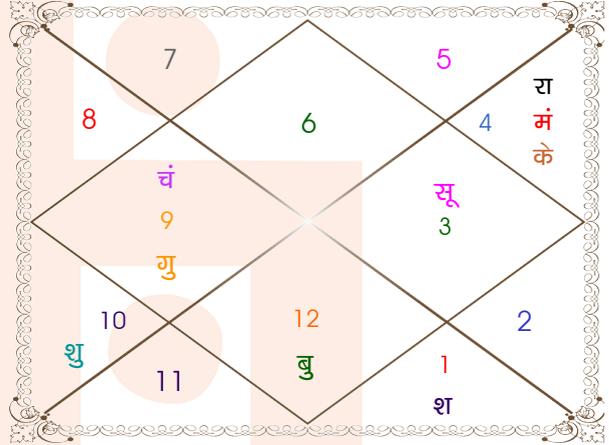
बलाबलज्ञानम्

त्रिंशश कुंडली



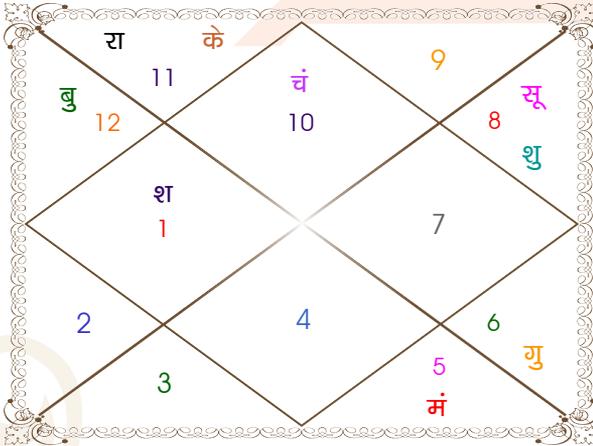
अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली



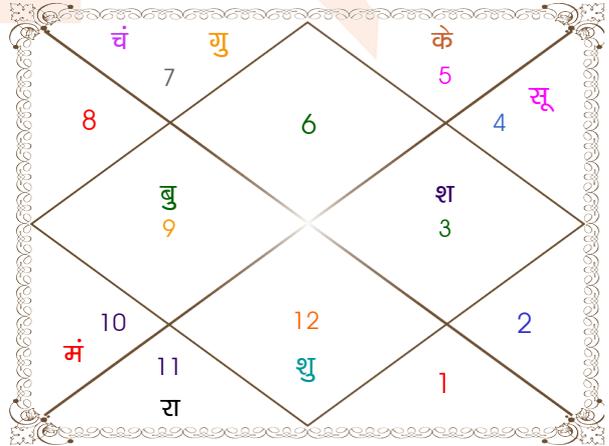
शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कुंभ	तुला	तुला	वृष	वृश्चि	कर्क	वृश्चि	धनु	मक	कर्क
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कुंभ	मिथु	तुला	कन्या	मीन	वृश्चि	वृश्चि	सिंह	मक	कर्क
चतुर्थांश	कुंभ	कर्क	तुला	वृश्चि	कुंभ	मक	वृश्चि	कन्या	मक	कर्क
सप्तमांश	कुंभ	मेष	वृश्चि	कुंभ	कर्क	वृष	वृष	मिथु	सिंह	कुंभ
नवमांश	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	वृष	तुला	धनु	कर्क	धनु	मीन	कन्या
दशमांश	मीन	कर्क	धनु	मिथु	वृश्चि	कन्या	कर्क	कन्या	वृश्चि	वृष
द्वादशांश	मीन	कन्या	धनु	वृश्चि	मेष	कुंभ	वृश्चि	तुला	मीन	कन्या
षोडशांश	तुला	कर्क	कर्क	मेष	कुंभ	कुंभ	कन्या	कुंभ	कर्क	कर्क
विंशांश	कुंभ	वृश्चि	सिंह	तुला	सिंह	वृष	मक	कुंभ	सिंह	सिंह
चतुर्विंशांश	वृश्चि	कर्क	मक	कर्क	वृष	तुला	सिंह	वृष	धनु	धनु
सप्तविंशांश	मक	धनु	मीन	कन्या	धनु	मिथु	मीन	मेष	मक	कर्क
त्रिंशांश	मेष	तुला	कुंभ	मीन	मीन	मीन	वृष	तुला	कन्या	कन्या
खवेदांश	कन्या	मिथु	धनु	कर्क	मीन	धनु	मक	मेष	कर्क	कर्क
अक्षवेदांश	मक	वृश्चि	मक	सिंह	मीन	कन्या	वृश्चि	मेष	कुंभ	कुंभ
षष्ट्यंश	कन्या	कर्क	तुला	मक	धनु	तुला	मीन	मिथु	कुंभ	सिंह

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	1 ---	1 ---	1 ---
चन्द्र	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
मंगल	1 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शुक्र	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
राहु	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.75	12.50	8.75	8.05	17.50	8.70	9.55	13.20	8.80
सप्तवर्ग	12.38	11.70	8.85	8.35	15.83	10.25	10.78	12.48	8.25
दशवर्ग	11.13	13.80	9.70	8.28	11.45	9.85	14.48	13.35	8.95
षोडशवर्ग	11.45	13.73	9.67	9.03	12.25	9.58	12.90	13.53	9.00

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	सम	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
मंगल	सम	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	शत्रु	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	सम	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	6	9	24	41	55	12	38
सप्तवर्गज बल	75	75	73	38	133	86	90
ओजयुग्मक बल	30	15	0	15	15	30	30
केन्द्र बल	15	15	60	60	15	60	30
द्रेष्काण बल	0	0	0	15	0	0	0
कुल स्थान बल	126	114	157	168	218	188	188
कुल दिग्बल	55	13	1	33	5	4	12
नतोन्नत बल	55	5	5	60	55	55	5
पक्ष बल	52	105	52	8	8	8	52
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	12	45	58	58	52	5	58
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	179	170	146	125	219	67	176
कुल चेष्टाबल	0	0	59	20	36	2	20
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	4	-8	3	-6	-12	2	-17
कुल षट्बल	424	340	382	367	501	306	387
रूप षट्बल	7.1	5.7	6.4	6.1	8.3	5.1	6.4
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	0.9	1.3	0.9	1.3	0.9	1.3
संबंधित पद	1	5	4	7	3	6	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	8.86	8.20	37.50	28.87	44.67	5.33	27.17
कष्ट फल	50.53	51.77	6.68	27.59	10.73	52.69	30.07

भाव बल

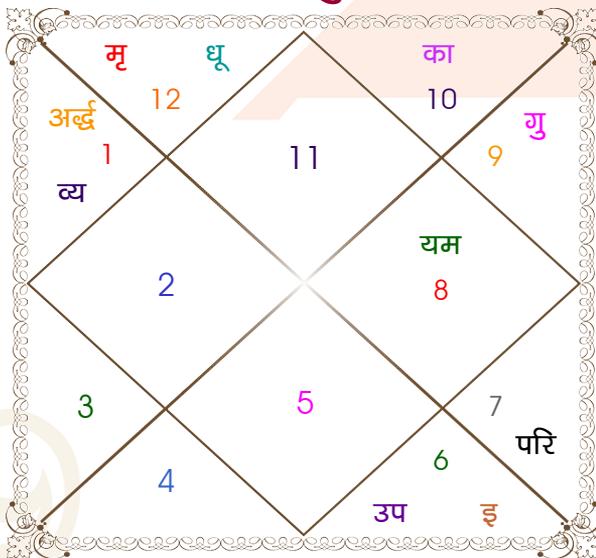
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	387	501	382	306	367	340	424	367	306	382	501	387
भावदिग्बल	60	40	10	0	20	40	30	10	20	30	40	40
भावदृष्टि बल	75	50	25	49	32	13	1	-7	22	17	21	24
कुल भाव बल	522	591	418	355	419	393	455	370	348	429	562	450
रूप भाव बल	8.7	9.9	7.0	5.9	7.0	6.6	7.6	6.2	5.8	7.2	9.4	7.5
संबंधित पद	3	1	8	11	7	9	4	10	12	6	2	5

उपग्रह एवं आरूढ़

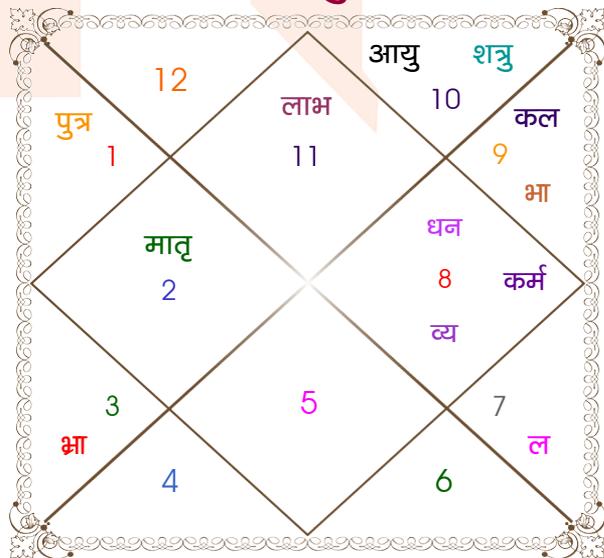
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कुंभ	03:49:33	--	--	धनिष्ठा	4	23
गुलिक	गु	धनु	21:53:03	--	--	पूर्वाषाढा	3	20
काल	का	मक	13:52:24	--	मूल	श्रवण	2	22
मृत्यु	मृ	मीन	07:26:44	--	--	उ०भाद्रपद	2	26
यमघंटक	यम	वृश्चि	15:04:02	--	--	अनुराधा	4	17
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मेष	05:12:45	--	--	अश्विनी	2	1
धूम	धू	मीन	12:16:47	--	--	उ०भाद्रपद	3	26
व्यतिपात	व्य	मेष	17:43:13	--	--	भरणी	2	2
परिवेश	परि	तुला	17:43:13	--	--	स्वाति	4	15
इन्द्रचाप	इ	कन्या	12:16:47	--	--	हस्त	1	13
उपकेतु	उप	कन्या	28:56:47	--	--	चित्रा	2	14

प्राणपद	:	मीन	15:30:41	कारकौश लग्न	:	मिथु	20:31:06
भाव लग्न	:	कुंभ	05:46:29	होरा लग्न	:	वृष	12:36:11
घटी लग्न	:	मीन	03:05:16	वर्णद लग्न	:	मेष	13:34:16

उपग्रह कुंडली



आरूढ़ कुंडली



प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	वु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	4	4	5	5	1	5	4	5	3	5	5	2	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	6
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
कुल	4	2	3	3	5	5	5	5	3	6	5	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	क	वु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
बुध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
कुल	2	4	3	4	3	2	2	6	1	3	5	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	5	5	5	5	7	1	4	5	5	5	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	क	सि	क	वु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	5	7	3	3	6	5	2	6	4	6	5	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
कुल	3	3	4	5	6	5	4	3	4	5	6	52

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	वु	वृ	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	3
बुध	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	6
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	3	1	3	2	6	4	2	4	3	3	5	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	वु	वृ	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	6	3	3	2	6	4	4	3	4	7	3	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	शु	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	6	4	2	4	3	3	5	3	3	1	3	2	39
गुरु	6	5	4	5	7	3	3	6	5	2	6	4	56
मंगल	4	2	4	3	4	3	2	2	6	1	3	5	39
सूर्य	4	5	3	5	5	2	4	4	5	5	1	5	48
शुक्र	5	4	3	4	5	6	4	3	3	4	5	6	52
बुध	1	4	5	5	5	5	2	5	5	5	5	7	54
चंद्र	5	5	3	6	5	3	4	2	3	3	5	5	49
बिन्दु	31	29	24	32	34	25	24	25	30	21	28	34	337
रेखा	25	27	32	24	22	31	32	31	26	35	28	22	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	शु	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	3	0	2	0	2	3	1	0	0	1	0	15
गुरु	1	3	1	1	2	1	0	2	0	0	3	0	14
मंगल	0	1	2	1	0	2	0	0	2	0	1	3	12
सूर्य	0	3	2	1	1	0	3	0	1	3	0	1	15
शुक्र	2	0	0	1	2	2	1	0	0	0	2	3	13
बुध	0	0	3	0	4	1	0	0	4	1	3	2	18
चंद्र	2	2	0	4	2	0	1	0	0	0	2	3	16
रेखा	8	12	8	10	11	8	8	3	7	4	12	12	103

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	शु	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	0	2	0	2	3	1	0	0	1	0	14
गुरु	0	3	0	1	2	0	0	2	0	0	3	0	11
मंगल	0	1	0	1	0	0	0	0	2	0	1	1	6
सूर्य	0	3	2	1	1	0	3	0	1	3	0	0	14
शुक्र	2	0	0	1	2	2	1	0	0	0	2	3	13
बुध	0	0	2	0	4	1	0	0	4	1	2	0	14
चंद्र	2	2	0	4	2	0	1	0	0	0	2	3	16
रेखा	6	12	4	10	11	5	8	3	7	4	11	7	88

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	105	135	55	124	103	113	102
ग्रह पिंड	69	66	28	20	58	20	86
शोध्य पिंड	174	201	83	144	161	133	188

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग	सर्वाष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग																																																						
<table border="1"> <tr><td>5</td><td>5</td></tr> <tr><td>4 12</td><td>1 10</td></tr> <tr><td>1</td><td>11</td></tr> <tr><td>5</td><td>4</td></tr> <tr><td>2</td><td>8</td></tr> <tr><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>3</td><td>5</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> <tr><td>5</td><td>2</td></tr> </table>	5	5	4 12	1 10	1	11	5	4	2	8	3	7	3	5	4	6	5	2	<table border="1"> <tr><td>34</td><td>21</td></tr> <tr><td>31 12</td><td>28 10</td></tr> <tr><td>1</td><td>11</td></tr> <tr><td>29</td><td>25</td></tr> <tr><td>2</td><td>8</td></tr> <tr><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>24</td><td>34</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> <tr><td>32</td><td>25</td></tr> </table>	34	21	31 12	28 10	1	11	29	25	2	8	3	7	24	34	4	6	32	25	<table border="1"> <tr><td>5</td><td>3</td></tr> <tr><td>5 12</td><td>5 10</td></tr> <tr><td>1</td><td>11</td></tr> <tr><td>5</td><td>2</td></tr> <tr><td>2</td><td>8</td></tr> <tr><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>3</td><td>5</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> <tr><td>6</td><td>3</td></tr> </table>	5	3	5 12	5 10	1	11	5	2	2	8	3	7	3	5	4	6	6	3
5	5																																																							
4 12	1 10																																																							
1	11																																																							
5	4																																																							
2	8																																																							
3	7																																																							
3	5																																																							
4	6																																																							
5	2																																																							
34	21																																																							
31 12	28 10																																																							
1	11																																																							
29	25																																																							
2	8																																																							
3	7																																																							
24	34																																																							
4	6																																																							
32	25																																																							
5	3																																																							
5 12	5 10																																																							
1	11																																																							
5	2																																																							
2	8																																																							
3	7																																																							
3	5																																																							
4	6																																																							
6	3																																																							
मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरु का अष्टकवर्ग																																																						
<table border="1"> <tr><td>5</td><td>1</td></tr> <tr><td>4 12</td><td>3 10</td></tr> <tr><td>1</td><td>11</td></tr> <tr><td>2</td><td>2</td></tr> <tr><td>2</td><td>8</td></tr> <tr><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>4</td><td>5</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> <tr><td>3</td><td>2</td></tr> </table>	5	1	4 12	3 10	1	11	2	2	2	8	3	7	4	5	4	6	3	2	<table border="1"> <tr><td>7</td><td>5</td></tr> <tr><td>1 12</td><td>5 10</td></tr> <tr><td>1</td><td>11</td></tr> <tr><td>4</td><td>5</td></tr> <tr><td>2</td><td>8</td></tr> <tr><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>5</td><td>5</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> <tr><td>5</td><td>2</td></tr> </table>	7	5	1 12	5 10	1	11	4	5	2	8	3	7	5	5	4	6	5	2	<table border="1"> <tr><td>4</td><td>2</td></tr> <tr><td>6 12</td><td>6 10</td></tr> <tr><td>1</td><td>11</td></tr> <tr><td>5</td><td>6</td></tr> <tr><td>2</td><td>8</td></tr> <tr><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>4</td><td>5</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> <tr><td>5</td><td>3</td></tr> </table>	4	2	6 12	6 10	1	11	5	6	2	8	3	7	4	5	4	6	5	3
5	1																																																							
4 12	3 10																																																							
1	11																																																							
2	2																																																							
2	8																																																							
3	7																																																							
4	5																																																							
4	6																																																							
3	2																																																							
7	5																																																							
1 12	5 10																																																							
1	11																																																							
4	5																																																							
2	8																																																							
3	7																																																							
5	5																																																							
4	6																																																							
5	2																																																							
4	2																																																							
6 12	6 10																																																							
1	11																																																							
5	6																																																							
2	8																																																							
3	7																																																							
4	5																																																							
4	6																																																							
5	3																																																							
शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग																																																						
<table border="1"> <tr><td>6</td><td>4</td></tr> <tr><td>5 12</td><td>5 10</td></tr> <tr><td>1</td><td>11</td></tr> <tr><td>4</td><td>3</td></tr> <tr><td>2</td><td>8</td></tr> <tr><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>3</td><td>5</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> </table>	6	4	5 12	5 10	1	11	4	3	2	8	3	7	3	5	4	6	4	6	<table border="1"> <tr><td>2</td><td>1</td></tr> <tr><td>6 12</td><td>3 10</td></tr> <tr><td>1</td><td>11</td></tr> <tr><td>4</td><td>3</td></tr> <tr><td>2</td><td>8</td></tr> <tr><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>2</td><td>5</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> <tr><td>4</td><td>3</td></tr> </table>	2	1	6 12	3 10	1	11	4	3	2	8	3	7	2	5	4	6	4	3	<table border="1"> <tr><td>6</td><td>3</td></tr> <tr><td>3 12</td><td>4 10</td></tr> <tr><td>1</td><td>11</td></tr> <tr><td>3</td><td>4</td></tr> <tr><td>2</td><td>8</td></tr> <tr><td>3</td><td>7</td></tr> <tr><td>2</td><td>5</td></tr> <tr><td>4</td><td>6</td></tr> <tr><td>6</td><td>4</td></tr> </table>	6	3	3 12	4 10	1	11	3	4	2	8	3	7	2	5	4	6	6	4
6	4																																																							
5 12	5 10																																																							
1	11																																																							
4	3																																																							
2	8																																																							
3	7																																																							
3	5																																																							
4	6																																																							
4	6																																																							
2	1																																																							
6 12	3 10																																																							
1	11																																																							
4	3																																																							
2	8																																																							
3	7																																																							
2	5																																																							
4	6																																																							
4	3																																																							
6	3																																																							
3 12	4 10																																																							
1	11																																																							
3	4																																																							
2	8																																																							
3	7																																																							
2	5																																																							
4	6																																																							
6	4																																																							

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 2 मास 12 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
15/11/1990	28/01/1991	27/01/2009	27/01/2025	28/01/2044
28/01/1991	27/01/2009	27/01/2025	28/01/2044	27/01/2061
00/00/0000	राहु 10/10/1993	गुरु 17/03/2011	शनि 31/01/2028	बुध 26/06/2046
00/00/0000	गुरु 04/03/1996	शनि 28/09/2013	बुध 10/10/2030	केतु 23/06/2047
00/00/0000	शनि 09/01/1999	बुध 04/01/2016	केतु 19/11/2031	शुक्र 23/04/2050
00/00/0000	बुध 29/07/2001	केतु 09/12/2016	शुक्र 19/01/2035	सूर्य 27/02/2051
00/00/0000	केतु 16/08/2002	शुक्र 10/08/2019	सूर्य 01/01/2036	चंद्र 29/07/2052
00/00/0000	शुक्र 16/08/2005	सूर्य 29/05/2020	चंद्र 01/08/2037	मंगल 26/07/2053
00/00/0000	सूर्य 11/07/2006	चंद्र 28/09/2021	मंगल 10/09/2038	राहु 12/02/2056
15/11/1990	चंद्र 10/01/2008	मंगल 04/09/2022	राहु 17/07/2041	गुरु 20/05/2058
चंद्र 28/01/1991	मंगल 27/01/2009	राहु 27/01/2025	गुरु 28/01/2044	शनि 27/01/2061

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
27/01/2061	28/01/2068	28/01/2088	27/01/2094	29/01/2104
28/01/2068	28/01/2088	27/01/2094	29/01/2104	16/11/2110
केतु 25/06/2061	शुक्र 29/05/2071	सूर्य 16/05/2088	चंद्र 28/11/2094	मंगल 26/06/2104
शुक्र 25/08/2062	सूर्य 29/05/2072	चंद्र 15/11/2088	मंगल 29/06/2095	राहु 15/07/2105
सूर्य 31/12/2062	चंद्र 27/01/2074	मंगल 23/03/2089	राहु 28/12/2096	गुरु 20/06/2106
चंद्र 01/08/2063	मंगल 30/03/2075	राहु 15/02/2090	गुरु 29/04/2098	शनि 30/07/2107
मंगल 28/12/2063	राहु 29/03/2078	गुरु 04/12/2090	शनि 28/11/2099	बुध 26/07/2108
राहु 15/01/2065	गुरु 27/11/2080	शनि 16/11/2091	बुध 29/04/2101	केतु 23/12/2108
गुरु 22/12/2065	शनि 28/01/2084	बुध 21/09/2092	केतु 29/11/2101	शुक्र 22/02/2110
शनि 31/01/2067	बुध 28/11/2086	केतु 27/01/2093	शुक्र 30/07/2103	सूर्य 30/06/2110
बुध 28/01/2068	केतु 28/01/2088	शुक्र 27/01/2094	सूर्य 29/01/2104	चंद्र 16/11/2110

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 0 वर्ष 2 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र	राहु - राहु	राहु - गुरु	राहु - शनि	राहु - बुध
15/11/1990	28/01/1991	10/10/1993	04/03/1996	09/01/1999
28/01/1991	10/10/1993	04/03/1996	09/01/1999	29/07/2001
00/00/0000	राहु 25/06/1991	गुरु 04/02/1994	शनि 16/08/1996	बुध 21/05/1999
00/00/0000	गुरु 03/11/1991	शनि 23/06/1994	बुध 11/01/1997	केतु 15/07/1999
00/00/0000	शनि 07/04/1992	बुध 25/10/1994	केतु 12/03/1997	शुक्र 17/12/1999
00/00/0000	बुध 25/08/1992	केतु 15/12/1994	शुक्र 02/09/1997	सूर्य 01/02/2000
15/11/1990	केतु 21/10/1992	शुक्र 10/05/1995	सूर्य 24/10/1997	चंद्र 19/04/2000
बुध 30/11/1990	शुक्र 04/04/1993	सूर्य 23/06/1995	चंद्र 19/01/1998	मंगल 12/06/2000
केतु 13/12/1990	सूर्य 23/05/1993	चंद्र 04/09/1995	मंगल 20/03/1998	राहु 30/10/2000
शुक्र 17/01/1991	चंद्र 13/08/1993	मंगल 25/10/1995	राहु 24/08/1998	गुरु 03/03/2001
सूर्य 28/01/1991	मंगल 10/10/1993	राहु 04/03/1996	गुरु 09/01/1999	शनि 29/07/2001
राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल
29/07/2001	16/08/2002	16/08/2005	11/07/2006	10/01/2008
16/08/2002	16/08/2005	11/07/2006	10/01/2008	27/01/2009
केतु 20/08/2001	शुक्र 15/02/2003	सूर्य 01/09/2005	चंद्र 25/08/2006	मंगल 01/02/2008
शुक्र 23/10/2001	सूर्य 11/04/2003	चंद्र 29/09/2005	मंगल 26/09/2006	राहु 30/03/2008
सूर्य 11/11/2001	चंद्र 11/07/2003	मंगल 18/10/2005	राहु 18/12/2006	गुरु 20/05/2008
चंद्र 13/12/2001	मंगल 13/09/2003	राहु 06/12/2005	गुरु 01/03/2007	शनि 19/07/2008
मंगल 05/01/2002	राहु 24/02/2004	गुरु 19/01/2006	शनि 26/05/2007	बुध 12/09/2008
राहु 03/03/2002	गुरु 19/07/2004	शनि 12/03/2006	बुध 12/08/2007	केतु 04/10/2008
गुरु 23/04/2002	शनि 09/01/2005	बुध 28/04/2006	केतु 13/09/2007	शुक्र 07/12/2008
शनि 23/06/2002	बुध 13/06/2005	केतु 17/05/2006	शुक्र 13/12/2007	सूर्य 26/12/2008
बुध 16/08/2002	केतु 16/08/2005	शुक्र 11/07/2006	सूर्य 10/01/2008	चंद्र 27/01/2009
गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र
27/01/2009	17/03/2011	28/09/2013	04/01/2016	09/12/2016
17/03/2011	28/09/2013	04/01/2016	09/12/2016	10/08/2019
गुरु 11/05/2009	शनि 11/08/2011	बुध 23/01/2014	केतु 23/01/2016	शुक्र 21/05/2017
शनि 11/09/2009	बुध 20/12/2011	केतु 12/03/2014	शुक्र 20/03/2016	सूर्य 09/07/2017
बुध 31/12/2009	केतु 12/02/2012	शुक्र 28/07/2014	सूर्य 06/04/2016	चंद्र 28/09/2017
केतु 14/02/2010	शुक्र 15/07/2012	सूर्य 08/09/2014	चंद्र 05/05/2016	मंगल 23/11/2017
शुक्र 24/06/2010	सूर्य 30/08/2012	चंद्र 16/11/2014	मंगल 25/05/2016	राहु 19/04/2018
सूर्य 02/08/2010	चंद्र 16/11/2012	मंगल 03/01/2015	राहु 15/07/2016	गुरु 26/08/2018
चंद्र 06/10/2010	मंगल 09/01/2013	राहु 07/05/2015	गुरु 29/08/2016	शनि 28/01/2019
मंगल 20/11/2010	राहु 27/05/2013	गुरु 25/08/2015	शनि 22/10/2016	बुध 15/06/2019
राहु 17/03/2011	गुरु 28/09/2013	शनि 04/01/2016	बुध 09/12/2016	केतु 10/08/2019

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि
10/08/2019	29/05/2020	28/09/2021	04/09/2022	27/01/2025
29/05/2020	28/09/2021	04/09/2022	27/01/2025	31/01/2028
सूर्य 25/08/2019	चंद्र 08/07/2020	मंगल 18/10/2021	राहु 13/01/2023	शनि 20/07/2025
चंद्र 18/09/2019	मंगल 06/08/2020	राहु 08/12/2021	गुरु 10/05/2023	बुध 23/12/2025
मंगल 05/10/2019	राहु 18/10/2020	गुरु 22/01/2022	शनि 26/09/2023	केतु 25/02/2026
राहु 18/11/2019	गुरु 22/12/2020	शनि 17/03/2022	बुध 28/01/2024	शुक्र 27/08/2026
गुरु 27/12/2019	शनि 09/03/2021	बुध 04/05/2022	केतु 19/03/2024	सूर्य 21/10/2026
शनि 12/02/2020	बुध 17/05/2021	केतु 24/05/2022	शुक्र 12/08/2024	चंद्र 21/01/2027
बुध 24/03/2020	केतु 14/06/2021	शुक्र 20/07/2022	सूर्य 25/09/2024	मंगल 26/03/2027
केतु 10/04/2020	शुक्र 03/09/2021	सूर्य 06/08/2022	चंद्र 07/12/2024	राहु 06/09/2027
शुक्र 29/05/2020	सूर्य 28/09/2021	चंद्र 04/09/2022	मंगल 27/01/2025	गुरु 31/01/2028
शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र
31/01/2028	10/10/2030	19/11/2031	19/01/2035	01/01/2036
10/10/2030	19/11/2031	19/01/2035	01/01/2036	01/08/2037
बुध 18/06/2028	केतु 03/11/2030	शुक्र 30/05/2032	सूर्य 05/02/2035	चंद्र 18/02/2036
केतु 15/08/2028	शुक्र 09/01/2031	सूर्य 27/07/2032	चंद्र 06/03/2035	मंगल 22/03/2036
शुक्र 25/01/2029	सूर्य 29/01/2031	चंद्र 31/10/2032	मंगल 26/03/2035	राहु 17/06/2036
सूर्य 16/03/2029	चंद्र 04/03/2031	मंगल 06/01/2033	राहु 17/05/2035	गुरु 02/09/2036
चंद्र 06/06/2029	मंगल 28/03/2031	राहु 29/06/2033	गुरु 02/07/2035	शनि 03/12/2036
मंगल 02/08/2029	राहु 27/05/2031	गुरु 30/11/2033	शनि 26/08/2035	बुध 23/02/2037
राहु 27/12/2029	गुरु 20/07/2031	शनि 01/06/2034	बुध 14/10/2035	केतु 29/03/2037
गुरु 07/05/2030	शनि 23/09/2031	बुध 12/11/2034	केतु 04/11/2035	शुक्र 03/07/2037
शनि 10/10/2030	बुध 19/11/2031	केतु 19/01/2035	शुक्र 01/01/2036	सूर्य 01/08/2037
शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु	बुध - बुध	बुध - केतु
01/08/2037	10/09/2038	17/07/2041	28/01/2044	26/06/2046
10/09/2038	17/07/2041	28/01/2044	26/06/2046	23/06/2047
मंगल 24/08/2037	राहु 13/02/2039	गुरु 17/11/2041	बुध 01/06/2044	केतु 17/07/2046
राहु 24/10/2037	गुरु 02/07/2039	शनि 12/04/2042	केतु 22/07/2044	शुक्र 15/09/2046
गुरु 17/12/2037	शनि 13/12/2039	बुध 22/08/2042	शुक्र 15/12/2044	सूर्य 03/10/2046
शनि 19/02/2038	बुध 09/05/2040	केतु 15/10/2042	सूर्य 28/01/2045	चंद्र 02/11/2046
बुध 18/04/2038	केतु 09/07/2040	शुक्र 18/03/2043	चंद्र 12/04/2045	मंगल 23/11/2046
केतु 11/05/2038	शुक्र 29/12/2040	सूर्य 03/05/2043	मंगल 02/06/2045	राहु 17/01/2047
शुक्र 18/07/2038	सूर्य 19/02/2041	चंद्र 19/07/2043	राहु 12/10/2045	गुरु 06/03/2047
सूर्य 07/08/2038	चंद्र 17/05/2041	मंगल 11/09/2043	गुरु 06/02/2046	शनि 02/05/2047
चंद्र 10/09/2038	मंगल 17/07/2041	राहु 28/01/2044	शनि 26/06/2046	बुध 23/06/2047

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र	बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु
23/06/2047	23/04/2050	27/02/2051	29/07/2052	26/07/2053
23/04/2050	27/02/2051	29/07/2052	26/07/2053	12/02/2056
शुक्र 12/12/2047	सूर्य 08/05/2050	चंद्र 11/04/2051	मंगल 19/08/2052	राहु 12/12/2053
सूर्य 02/02/2048	चंद्र 03/06/2050	मंगल 11/05/2051	राहु 12/10/2052	गुरु 16/04/2054
चंद्र 28/04/2048	मंगल 21/06/2050	राहु 28/07/2051	गुरु 29/11/2052	शनि 10/09/2054
मंगल 28/06/2048	राहु 07/08/2050	गुरु 05/10/2051	शनि 26/01/2053	बुध 20/01/2055
राहु 30/11/2048	गुरु 17/09/2050	शनि 26/12/2051	बुध 18/03/2053	केतु 15/03/2055
गुरु 17/04/2049	शनि 05/11/2050	बुध 08/03/2052	केतु 08/04/2053	शुक्र 18/08/2055
शनि 28/09/2049	बुध 19/12/2050	केतु 07/04/2052	शुक्र 07/06/2053	सूर्य 03/10/2055
बुध 21/02/2050	केतु 06/01/2051	शुक्र 03/07/2052	सूर्य 26/06/2053	चंद्र 20/12/2055
केतु 23/04/2050	शुक्र 27/02/2051	सूर्य 29/07/2052	चंद्र 26/07/2053	मंगल 12/02/2056
बुध - गुरु	बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य
12/02/2056	20/05/2058	27/01/2061	25/06/2061	25/08/2062
20/05/2058	27/01/2061	25/06/2061	25/08/2062	31/12/2062
गुरु 02/06/2056	शनि 23/10/2058	केतु 05/02/2061	शुक्र 04/09/2061	सूर्य 01/09/2062
शनि 11/10/2056	बुध 11/03/2059	शुक्र 02/03/2061	सूर्य 26/09/2061	चंद्र 11/09/2062
बुध 05/02/2057	केतु 07/05/2059	सूर्य 09/03/2061	चंद्र 31/10/2061	मंगल 19/09/2062
केतु 25/03/2057	शुक्र 18/10/2059	चंद्र 22/03/2061	मंगल 25/11/2061	राहु 08/10/2062
शुक्र 10/08/2057	सूर्य 06/12/2059	मंगल 30/03/2061	राहु 28/01/2062	गुरु 25/10/2062
सूर्य 21/09/2057	चंद्र 26/02/2060	राहु 22/04/2061	गुरु 26/03/2062	शनि 14/11/2062
चंद्र 29/11/2057	मंगल 24/04/2060	गुरु 12/05/2061	शनि 01/06/2062	बुध 03/12/2062
मंगल 16/01/2058	राहु 18/09/2060	शनि 04/06/2061	बुध 01/08/2062	केतु 10/12/2062
राहु 20/05/2058	गुरु 27/01/2061	बुध 25/06/2061	केतु 25/08/2062	शुक्र 31/12/2062
केतु - चंद्र	केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि
31/12/2062	01/08/2063	28/12/2063	15/01/2065	22/12/2065
01/08/2063	28/12/2063	15/01/2065	22/12/2065	31/01/2067
चंद्र 18/01/2063	मंगल 10/08/2063	राहु 24/02/2064	गुरु 01/03/2065	शनि 24/02/2066
मंगल 30/01/2063	राहु 01/09/2063	गुरु 15/04/2064	शनि 24/04/2065	बुध 22/04/2066
राहु 03/03/2063	गुरु 21/09/2063	शनि 15/06/2064	बुध 12/06/2065	केतु 16/05/2066
गुरु 01/04/2063	शनि 15/10/2063	बुध 08/08/2064	केतु 02/07/2065	शुक्र 22/07/2066
शनि 05/05/2063	बुध 05/11/2063	केतु 31/08/2064	शुक्र 27/08/2065	सूर्य 12/08/2066
बुध 04/06/2063	केतु 14/11/2063	शुक्र 02/11/2064	सूर्य 13/09/2065	चंद्र 14/09/2066
केतु 16/06/2063	शुक्र 09/12/2063	सूर्य 22/11/2064	चंद्र 12/10/2065	मंगल 08/10/2066
शुक्र 22/07/2063	सूर्य 16/12/2063	चंद्र 24/12/2064	मंगल 01/11/2065	राहु 08/12/2066
सूर्य 01/08/2063	चंद्र 28/12/2063	मंगल 15/01/2065	राहु 22/12/2065	गुरु 31/01/2067

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध	शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल
31/01/2067	28/01/2068	29/05/2071	29/05/2072	27/01/2074
28/01/2068	29/05/2071	29/05/2072	27/01/2074	30/03/2075
बुध 23/03/2067	शुक्र 18/08/2068	सूर्य 17/06/2071	चंद्र 18/07/2072	मंगल 21/02/2074
केतु 13/04/2067	सूर्य 18/10/2068	चंद्र 17/07/2071	मंगल 23/08/2072	राहु 26/04/2074
शुक्र 13/06/2067	चंद्र 27/01/2069	मंगल 07/08/2071	राहु 22/11/2072	गुरु 22/06/2074
सूर्य 01/07/2067	मंगल 08/04/2069	राहु 01/10/2071	गुरु 11/02/2073	शनि 28/08/2074
चंद्र 31/07/2067	राहु 08/10/2069	गुरु 19/11/2071	शनि 19/05/2073	बुध 28/10/2074
मंगल 21/08/2067	गुरु 19/03/2070	शनि 16/01/2072	बुध 13/08/2073	केतु 22/11/2074
राहु 14/10/2067	शनि 28/09/2070	बुध 07/03/2072	केतु 18/09/2073	शुक्र 01/02/2075
गुरु 02/12/2067	बुध 19/03/2071	केतु 29/03/2072	शुक्र 28/12/2073	सूर्य 22/02/2075
शनि 28/01/2068	केतु 29/05/2071	शुक्र 29/05/2072	सूर्य 27/01/2074	चंद्र 30/03/2075
शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु
30/03/2075	29/03/2078	27/11/2080	28/01/2084	28/11/2086
29/03/2078	27/11/2080	28/01/2084	28/11/2086	28/01/2088
राहु 10/09/2075	गुरु 06/08/2078	शनि 29/05/2081	बुध 23/06/2084	केतु 23/12/2086
गुरु 03/02/2076	शनि 07/01/2079	बुध 09/11/2081	केतु 22/08/2084	शुक्र 04/03/2087
शनि 25/07/2076	बुध 25/05/2079	केतु 16/01/2082	शुक्र 10/02/2085	सूर्य 25/03/2087
बुध 28/12/2076	केतु 21/07/2079	शुक्र 28/07/2082	सूर्य 03/04/2085	चंद्र 29/04/2087
केतु 02/03/2077	शुक्र 31/12/2079	सूर्य 23/09/2082	चंद्र 28/06/2085	मंगल 24/05/2087
शुक्र 31/08/2077	सूर्य 17/02/2080	चंद्र 29/12/2082	मंगल 28/08/2085	राहु 27/07/2087
सूर्य 25/10/2077	चंद्र 08/05/2080	मंगल 06/03/2083	राहु 30/01/2086	गुरु 22/09/2087
चंद्र 24/01/2078	मंगल 04/07/2080	राहु 27/08/2083	गुरु 17/06/2086	शनि 29/11/2087
मंगल 29/03/2078	राहु 27/11/2080	गुरु 28/01/2084	शनि 28/11/2086	बुध 28/01/2088
सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु
28/01/2088	16/05/2088	15/11/2088	23/03/2089	15/02/2090
16/05/2088	15/11/2088	23/03/2089	15/02/2090	04/12/2090
सूर्य 02/02/2088	चंद्र 01/06/2088	मंगल 23/11/2088	राहु 11/05/2089	गुरु 26/03/2090
चंद्र 12/02/2088	मंगल 11/06/2088	राहु 12/12/2088	गुरु 24/06/2089	शनि 11/05/2090
मंगल 18/02/2088	राहु 09/07/2088	गुरु 29/12/2088	शनि 15/08/2089	बुध 21/06/2090
राहु 05/03/2088	गुरु 02/08/2088	शनि 18/01/2089	बुध 01/10/2089	केतु 08/07/2090
गुरु 20/03/2088	शनि 31/08/2088	बुध 05/02/2089	केतु 20/10/2089	शुक्र 26/08/2090
शनि 06/04/2088	बुध 26/09/2088	केतु 13/02/2089	शुक्र 14/12/2089	सूर्य 10/09/2090
बुध 22/04/2088	केतु 07/10/2088	शुक्र 06/03/2089	सूर्य 30/12/2089	चंद्र 04/10/2090
केतु 28/04/2088	शुक्र 06/11/2088	सूर्य 12/03/2089	चंद्र 27/01/2090	मंगल 21/10/2090
शुक्र 16/05/2088	सूर्य 15/11/2088	चंद्र 23/03/2089	मंगल 15/02/2090	राहु 04/12/2090

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि	सूर्य - बुध	सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र
04/12/2090	16/11/2091	21/09/2092	27/01/2093	27/01/2094
16/11/2091	21/09/2092	27/01/2093	27/01/2094	28/11/2094
शनि 28/01/2091	बुध 30/12/2091	केतु 29/09/2092	शुक्र 29/03/2093	चंद्र 22/02/2094
बुध 18/03/2091	केतु 17/01/2092	शुक्र 20/10/2092	सूर्य 16/04/2093	मंगल 12/03/2094
केतु 07/04/2091	शुक्र 09/03/2092	सूर्य 26/10/2092	चंद्र 17/05/2093	राहु 26/04/2094
शुक्र 04/06/2091	सूर्य 24/03/2092	चंद्र 06/11/2092	मंगल 07/06/2093	गुरु 06/06/2094
सूर्य 21/06/2091	चंद्र 19/04/2092	मंगल 14/11/2092	राहु 01/08/2093	शनि 24/07/2094
चंद्र 20/07/2091	मंगल 07/05/2092	राहु 03/12/2092	गुरु 19/09/2093	बुध 05/09/2094
मंगल 10/08/2091	राहु 23/06/2092	गुरु 20/12/2092	शनि 15/11/2093	केतु 23/09/2094
राहु 01/10/2091	गुरु 03/08/2092	शनि 09/01/2093	बुध 06/01/2094	शुक्र 13/11/2094
गुरु 16/11/2091	शनि 21/09/2092	बुध 27/01/2093	केतु 27/01/2094	सूर्य 28/11/2094
चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध
28/11/2094	29/06/2095	28/12/2096	29/04/2098	28/11/2099
29/06/2095	28/12/2096	29/04/2098	28/11/2099	29/04/2101
मंगल 10/12/2094	राहु 19/09/2095	गुरु 03/03/2097	शनि 29/07/2098	बुध 09/02/2100
राहु 11/01/2095	गुरु 01/12/2095	शनि 19/05/2097	बुध 19/10/2098	केतु 12/03/2100
गुरु 09/02/2095	शनि 26/02/2096	बुध 27/07/2097	केतु 22/11/2098	शुक्र 06/06/2100
शनि 14/03/2095	बुध 13/05/2096	केतु 24/08/2097	शुक्र 26/02/2099	सूर्य 02/07/2100
बुध 14/04/2095	केतु 14/06/2096	शुक्र 13/11/2097	सूर्य 27/03/2099	चंद्र 14/08/2100
केतु 26/04/2095	शुक्र 14/09/2096	सूर्य 08/12/2097	चंद्र 14/05/2099	मंगल 13/09/2100
शुक्र 31/05/2095	सूर्य 11/10/2096	चंद्र 17/01/2098	मंगल 17/06/2099	राहु 30/11/2100
सूर्य 11/06/2095	चंद्र 26/11/2096	मंगल 15/02/2098	राहु 12/09/2099	गुरु 07/02/2101
चंद्र 29/06/2095	मंगल 28/12/2096	राहु 29/04/2098	गुरु 28/11/2099	शनि 29/04/2101
चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु
29/04/2101	29/11/2101	30/07/2103	29/01/2104	26/06/2104
29/11/2101	30/07/2103	29/01/2104	26/06/2104	15/07/2105
केतु 12/05/2101	शुक्र 10/03/2102	सूर्य 08/08/2103	मंगल 07/02/2104	राहु 23/08/2104
शुक्र 16/06/2101	सूर्य 09/04/2102	चंद्र 24/08/2103	राहु 29/02/2104	गुरु 13/10/2104
सूर्य 27/06/2101	चंद्र 30/05/2102	मंगल 03/09/2103	गुरु 20/03/2104	शनि 12/12/2104
चंद्र 15/07/2101	मंगल 05/07/2102	राहु 01/10/2103	शनि 12/04/2104	बुध 05/02/2105
मंगल 27/07/2101	राहु 04/10/2102	गुरु 25/10/2103	बुध 04/05/2104	केतु 27/02/2105
राहु 28/08/2101	गुरु 24/12/2102	शनि 23/11/2103	केतु 12/05/2104	शुक्र 02/05/2105
गुरु 26/09/2101	शनि 31/03/2103	बुध 19/12/2103	शुक्र 06/06/2104	सूर्य 21/05/2105
शनि 29/10/2101	बुध 25/06/2103	केतु 29/12/2103	सूर्य 14/06/2104	चंद्र 22/06/2105
बुध 29/11/2101	केतु 30/07/2103	शुक्र 29/01/2104	चंद्र 26/06/2104	मंगल 15/07/2105

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शनि - केतु		शनि - शनि - शुक्र		शनि - शनि - सूर्य		शनि - शनि - चंद्र	
23/12/2025 07:22		25/02/2026 09:40		27/08/2026 12:51		21/10/2026 11:24	
25/02/2026 09:40		27/08/2026 12:51		21/10/2026 11:24		21/01/2027 00:59	
केतु	27/12/2025 01:06	शुक्र	27/03/2026 22:12	सूर्य	30/08/2026 06:47	चंद्र	29/10/2026 02:32
शुक्र	06/01/2026 17:29	सूर्य	06/04/2026 01:58	चंद्र	03/09/2026 20:39	मंगल	03/11/2026 10:44
सूर्य	09/01/2026 22:24	चंद्र	21/04/2026 08:14	मंगल	07/09/2026 01:34	राहु	17/11/2026 04:22
चंद्र	15/01/2026 06:35	मंगल	02/05/2026 00:37	राहु	15/09/2026 07:21	गुरु	29/11/2026 09:23
मंगल	19/01/2026 00:20	राहु	29/05/2026 11:53	गुरु	22/09/2026 15:10	शनि	13/12/2026 21:20
राहु	28/01/2026 15:04	गुरु	22/06/2026 21:55	शनि	01/10/2026 07:56	बुध	26/12/2026 20:39
गुरु	06/02/2026 04:11	शनि	21/07/2026 21:49	बुध	09/10/2026 02:44	केतु	01/01/2027 04:51
शनि	16/02/2026 07:45	बुध	16/08/2026 20:28	केतु	12/10/2026 07:39	शुक्र	16/01/2027 11:07
बुध	25/02/2026 09:40	केतु	27/08/2026 12:51	शुक्र	21/10/2026 11:24	सूर्य	21/01/2027 00:59
शनि - शनि - मंगल		शनि - शनि - राहु		शनि - शनि - गुरु		शनि - बुध - बुध	
21/01/2027 00:59		26/03/2027 03:18		06/09/2027 22:57		31/01/2028 11:06	
26/03/2027 03:18		06/09/2027 22:57		31/01/2028 11:06		18/06/2028 17:45	
मंगल	24/01/2027 18:43	राहु	19/04/2027 20:39	गुरु	26/09/2027 11:47	बुध	20/02/2028 04:38
राहु	03/02/2027 09:28	गुरु	11/05/2027 20:04	शनि	19/10/2027 16:30	केतु	28/02/2028 07:38
गुरु	11/02/2027 22:35	शनि	06/06/2027 22:23	बुध	09/11/2027 10:37	शुक्र	22/03/2028 12:44
शनि	22/02/2027 02:09	बुध	30/06/2027 06:46	केतु	17/11/2027 23:44	सूर्य	29/03/2028 11:52
बुध	03/03/2027 04:04	केतु	09/07/2027 21:31	शुक्र	12/12/2027 09:45	चंद्र	10/04/2028 02:25
केतु	06/03/2027 21:48	शुक्र	06/08/2027 08:47	सूर्य	19/12/2027 17:33	मंगल	18/04/2028 05:24
शुक्र	17/03/2027 14:12	सूर्य	14/08/2027 14:34	चंद्र	31/12/2027 22:34	राहु	09/05/2028 02:48
सूर्य	20/03/2027 19:06	चंद्र	28/08/2027 08:13	मंगल	09/01/2028 11:41	गुरु	27/05/2028 16:29
चंद्र	26/03/2027 03:18	मंगल	06/09/2027 22:57	राहु	31/01/2028 11:06	शनि	18/06/2028 17:45
शनि - बुध - केतु		शनि - बुध - शुक्र		शनि - बुध - सूर्य		शनि - बुध - चंद्र	
18/06/2028 17:45		15/08/2028 02:08		25/01/2029 22:39		16/03/2029 02:25	
15/08/2028 02:08		25/01/2029 22:39		16/03/2029 02:25		06/06/2029 00:40	
केतु	22/06/2028 02:02	शुक्र	11/09/2028 09:33	सूर्य	28/01/2029 09:38	चंद्र	22/03/2029 22:16
शुक्र	01/07/2028 15:26	सूर्य	19/09/2028 14:10	चंद्र	01/02/2029 11:57	मंगल	27/03/2029 16:58
सूर्य	04/07/2028 12:15	चंद्र	03/10/2028 05:53	मंगल	04/02/2029 08:46	राहु	08/04/2029 23:54
चंद्र	09/07/2028 06:57	मंगल	12/10/2028 19:17	राहु	11/02/2029 17:44	गुरु	19/04/2029 22:04
मंगल	12/07/2028 15:14	राहु	06/11/2028 09:10	गुरु	18/02/2029 07:02	शनि	02/05/2029 21:24
राहु	21/07/2028 05:42	गुरु	28/11/2028 05:30	शनि	26/02/2029 01:50	बुध	14/05/2029 11:57
गुरु	28/07/2028 21:13	शनि	24/12/2028 04:09	बुध	05/03/2029 00:58	केतु	19/05/2029 06:39
शनि	06/08/2028 23:08	बुध	16/01/2029 09:15	केतु	07/03/2029 21:47	शुक्र	01/06/2029 22:22
बुध	15/08/2028 02:08	केतु	25/01/2029 22:39	शुक्र	16/03/2029 02:25	सूर्य	06/06/2029 00:40

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - बुध - मंगल	शनि - बुध - राहु	शनि - बुध - गुरु	शनि - बुध - शनि
06/06/2029 00:40	02/08/2029 09:03	27/12/2029 20:20	07/05/2030 22:21
02/08/2029 09:03	27/12/2029 20:20	07/05/2030 22:21	10/10/2030 14:15
मंगल 09/06/2029 08:58	राहु 24/08/2029 11:57	गुरु 14/01/2030 07:48	शनि 01/06/2030 13:52
राहु 17/06/2029 23:25	गुरु 13/09/2029 03:51	शनि 04/02/2030 01:55	बुध 23/06/2030 15:07
गुरु 25/06/2029 14:56	शनि 06/10/2029 12:14	बुध 22/02/2030 15:36	केतु 02/07/2030 17:03
शनि 04/07/2029 16:52	बुध 27/10/2029 09:38	केतु 02/03/2030 07:07	शुक्र 28/07/2030 15:42
बुध 12/07/2029 19:51	केतु 05/11/2029 00:05	शुक्र 24/03/2030 03:28	सूर्य 05/08/2030 10:29
केतु 16/07/2029 04:08	शुक्र 29/11/2029 13:58	सूर्य 30/03/2030 16:46	चंद्र 18/08/2030 09:49
शुक्र 25/07/2029 17:32	सूर्य 06/12/2029 22:56	चंद्र 10/04/2030 14:56	मंगल 27/08/2030 11:45
सूर्य 28/07/2029 14:21	चंद्र 19/12/2029 05:52	मंगल 18/04/2030 06:27	राहु 19/09/2030 20:08
चंद्र 02/08/2029 09:03	मंगल 27/12/2029 20:20	राहु 07/05/2030 22:21	गुरु 10/10/2030 14:15
शनि - केतु - केतु	शनि - केतु - शुक्र	शनि - केतु - सूर्य	शनि - केतु - चंद्र
10/10/2030 14:15	03/11/2030 05:00	09/01/2031 16:16	29/01/2031 22:03
03/11/2030 05:00	09/01/2031 16:16	29/01/2031 22:03	04/03/2031 15:41
केतु 11/10/2030 23:18	शुक्र 14/11/2030 10:52	सूर्य 10/01/2031 16:33	चंद्र 01/02/2031 17:31
शुक्र 15/10/2030 21:46	सूर्य 17/11/2030 19:50	चंद्र 12/01/2031 09:02	मंगल 03/02/2031 16:45
सूर्य 17/10/2030 02:06	चंद्र 23/11/2030 10:47	मंगल 13/01/2031 13:23	राहु 08/02/2031 18:12
चंद्र 19/10/2030 01:20	मंगल 27/11/2030 09:14	राहु 16/01/2031 14:15	गुरु 13/02/2031 06:09
मंगल 20/10/2030 10:24	राहु 07/12/2030 12:08	गुरु 19/01/2031 07:01	शनि 18/02/2031 14:20
राहु 23/10/2030 23:24	गुरु 16/12/2030 12:02	शनि 22/01/2031 11:56	बुध 23/02/2031 09:02
गुरु 27/10/2030 02:58	शनि 27/12/2030 04:25	बुध 25/01/2031 08:45	केतु 25/02/2031 08:16
शनि 30/10/2030 20:42	बुध 05/01/2031 17:49	केतु 26/01/2031 13:05	शुक्र 02/03/2031 23:12
बुध 03/11/2030 05:00	केतु 09/01/2031 16:16	शुक्र 29/01/2031 22:03	सूर्य 04/03/2031 15:41
शनि - केतु - मंगल	शनि - केतु - राहु	शनि - केतु - गुरु	शनि - केतु - शनि
04/03/2031 15:41	28/03/2031 06:26	27/05/2031 23:47	20/07/2031 23:12
28/03/2031 06:26	27/05/2031 23:47	20/07/2031 23:12	23/09/2031 01:31
मंगल 06/03/2031 00:45	राहु 06/04/2031 09:02	गुरु 04/06/2031 04:30	शनि 31/07/2031 02:46
राहु 09/03/2031 13:46	गुरु 14/04/2031 11:21	शनि 12/06/2031 17:37	बुध 09/08/2031 04:42
गुरु 12/03/2031 17:20	शनि 24/04/2031 02:06	बुध 20/06/2031 09:08	केतु 12/08/2031 22:26
शनि 16/03/2031 11:04	बुध 02/05/2031 16:33	केतु 23/06/2031 12:42	शुक्र 23/08/2031 14:49
बुध 19/03/2031 19:21	केतु 06/05/2031 05:34	शुक्र 02/07/2031 12:36	सूर्य 26/08/2031 19:44
केतु 21/03/2031 04:25	शुक्र 16/05/2031 08:27	सूर्य 05/07/2031 05:22	चंद्र 01/09/2031 03:55
शुक्र 25/03/2031 02:52	सूर्य 19/05/2031 09:19	चंद्र 09/07/2031 17:19	मंगल 04/09/2031 21:40
सूर्य 26/03/2031 07:12	चंद्र 24/05/2031 10:46	मंगल 12/07/2031 20:53	राहु 14/09/2031 12:24
चंद्र 28/03/2031 06:26	मंगल 27/05/2031 23:47	राहु 20/07/2031 23:12	गुरु 23/09/2031 01:31

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : मंगला 0 वर्ष 0 मास 10 दिन

मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष
15/11/1990	26/11/1990	25/11/1992	26/11/1995	26/11/1999
26/11/1990	25/11/1992	26/11/1995	26/11/1999	25/11/2004
00/00/0000	पिंग 05/01/1991	धांय 24/02/1993	भाम 06/05/1996	भद्रि 05/08/2000
00/00/0000	धांय 07/03/1991	भाम 26/06/1993	भद्रि 25/11/1996	उल्क 06/06/2001
00/00/0000	भाम 27/05/1991	भद्रि 25/11/1993	उल्क 27/07/1997	सिद्ध 27/05/2002
00/00/0000	भद्रि 06/09/1991	उल्क 27/05/1994	सिद्ध 07/05/1998	संक 07/07/2003
00/00/0000	उल्क 05/01/1992	सिद्ध 26/12/1994	संक 27/03/1999	मंग 27/08/2003
00/00/0000	सिद्ध 26/05/1992	संक 27/08/1995	मंग 07/05/1999	पिंग 06/12/2003
15/11/1990	संक 05/11/1992	मंग 26/09/1995	पिंग 27/07/1999	धांय 06/05/2004
संक 26/11/1990	मंग 25/11/1992	पिंग 26/11/1995	धांय 26/11/1999	भाम 25/11/2004

उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष
25/11/2004	26/11/2010	25/11/2017	25/11/2025	26/11/2026
26/11/2010	25/11/2017	25/11/2025	26/11/2026	25/11/2028
उल्क 25/11/2005	सिद्ध 06/04/2012	संक 06/09/2019	मंग 05/12/2025	पिंग 05/01/2027
सिद्ध 25/01/2007	संक 26/10/2013	मंग 26/11/2019	पिंग 26/12/2025	धांय 07/03/2027
संक 26/05/2008	मंग 05/01/2014	पिंग 06/05/2020	धांय 25/01/2026	भाम 27/05/2027
मंग 26/07/2008	पिंग 27/05/2014	धांय 05/01/2021	भाम 07/03/2026	भद्रि 06/09/2027
पिंग 25/11/2008	धांय 26/12/2014	भाम 25/11/2021	भद्रि 27/04/2026	उल्क 05/01/2028
धांय 27/05/2009	भाम 06/10/2015	भद्रि 05/01/2023	उल्क 26/06/2026	सिद्ध 26/05/2028
भाम 25/01/2010	भद्रि 25/09/2016	उल्क 06/05/2024	सिद्ध 05/09/2026	संक 05/11/2028
भद्रि 26/11/2010	उल्क 25/11/2017	सिद्ध 25/11/2025	संक 26/11/2026	मंग 25/11/2028

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
25/11/2028	26/11/2031	26/11/2035	25/11/2040	26/11/2046
26/11/2031	26/11/2035	25/11/2040	26/11/2046	25/11/2053
धांय 24/02/2029	भाम 06/05/2032	भद्रि 05/08/2036	उल्क 25/11/2041	सिद्ध 06/04/2048
भाम 26/06/2029	भद्रि 25/11/2032	उल्क 06/06/2037	सिद्ध 25/01/2043	संक 26/10/2049
भद्रि 25/11/2029	उल्क 27/07/2033	सिद्ध 27/05/2038	संक 26/05/2044	मंग 05/01/2050
उल्क 27/05/2030	सिद्ध 07/05/2034	संक 07/07/2039	मंग 26/07/2044	पिंग 27/05/2050
सिद्ध 26/12/2030	संक 27/03/2035	मंग 27/08/2039	पिंग 25/11/2044	धांय 26/12/2050
संक 27/08/2031	मंग 07/05/2035	पिंग 06/12/2039	धांय 27/05/2045	भाम 06/10/2051
मंग 26/09/2031	पिंग 27/07/2035	धांय 06/05/2040	भाम 25/01/2046	भद्रि 25/09/2052
पिंग 26/11/2031	धांय 26/11/2035	भाम 25/11/2040	भद्रि 26/11/2046	उल्क 25/11/2053
संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष
25/11/2053	25/11/2061	26/11/2062	25/11/2064	26/11/2067
25/11/2061	26/11/2062	25/11/2064	26/11/2067	26/11/2071
संक 06/09/2055	मंग 05/12/2061	पिंग 05/01/2063	धांय 24/02/2065	भाम 06/05/2068
मंग 26/11/2055	पिंग 26/12/2061	धांय 07/03/2063	भाम 26/06/2065	भद्रि 25/11/2068
पिंग 06/05/2056	धांय 25/01/2062	भाम 27/05/2063	भद्रि 25/11/2065	उल्क 27/07/2069
धांय 05/01/2057	भाम 07/03/2062	भद्रि 06/09/2063	उल्क 27/05/2066	सिद्ध 07/05/2070
भाम 25/11/2057	भद्रि 27/04/2062	उल्क 05/01/2064	सिद्ध 26/12/2066	संक 27/03/2071
भद्रि 05/01/2059	उल्क 26/06/2062	सिद्ध 26/05/2064	संक 27/08/2067	मंग 07/05/2071
उल्क 06/05/2060	सिद्ध 05/09/2062	संक 05/11/2064	मंग 26/09/2067	पिंग 27/07/2071
सिद्ध 25/11/2061	संक 26/11/2062	मंग 25/11/2064	पिंग 26/11/2067	धांय 26/11/2071
भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
26/11/2071	25/11/2076	26/11/2082	25/11/2089	25/11/2097
25/11/2076	26/11/2082	25/11/2089	25/11/2097	15/11/2098
भद्रि 05/08/2072	उल्क 25/11/2077	सिद्ध 06/04/2084	संक 06/09/2091	मंग 05/12/2097
उल्क 06/06/2073	सिद्ध 25/01/2079	संक 26/10/2085	मंग 26/11/2091	पिंग 26/12/2097
सिद्ध 27/05/2074	संक 26/05/2080	मंग 05/01/2086	पिंग 06/05/2092	धांय 25/01/2098
संक 07/07/2075	मंग 26/07/2080	पिंग 27/05/2086	धांय 05/01/2093	भाम 07/03/2098
मंग 27/08/2075	पिंग 25/11/2080	धांय 26/12/2086	भाम 25/11/2093	भद्रि 27/04/2098
पिंग 06/12/2075	धांय 27/05/2081	भाम 06/10/2087	भद्रि 05/01/2095	उल्क 26/06/2098
धांय 06/05/2076	भाम 25/01/2082	भद्रि 25/09/2088	उल्क 06/05/2096	सिद्ध 05/09/2098
भाम 25/11/2076	भद्रि 26/11/2082	उल्क 25/11/2089	सिद्ध 25/11/2097	संक 15/11/2098

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

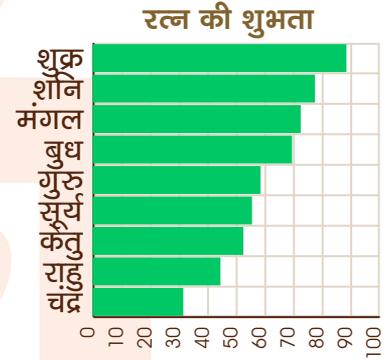
मूलांक	6
भाग्यांक	9
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	88%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, भाग्योदय
नीलम	शनि	77%	धनार्जन, कम खर्च, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	72%	सुख, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	69%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
पुखराज	गुरु	58%	शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन, धन
माणिक्य	सूर्य	55%	भाग्योदय, दम्पति
लहसुनिया	केतु	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
गोमेद	राहु	44%	व्यय, हानि
मोती	चंद्र	31%	नेष्ट भाग्य, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	28/01/1991	61%	44%	84%	56%	64%	88%	77%	19%	58%
राहु	27/01/2009	34%	6%	59%	69%	58%	94%	83%	59%	28%
गुरु	27/01/2025	61%	44%	78%	56%	70%	75%	77%	44%	52%
शनि	28/01/2044	34%	6%	59%	75%	58%	94%	89%	53%	28%
बुध	27/01/2061	61%	6%	72%	81%	58%	94%	77%	44%	52%
केतु	28/01/2068	34%	6%	78%	69%	58%	94%	64%	19%	64%
शुक्र	28/01/2088	34%	6%	72%	75%	58%	100%	83%	53%	58%
सूर्य	27/01/2094	67%	44%	78%	69%	64%	75%	64%	19%	28%
चंद्र	29/01/2104	61%	53%	72%	75%	58%	88%	77%	19%	28%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए हीरा व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा, पन्ना, पुखराज, माणिक्य एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद व मोती रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभदायक सिद्ध होगा। यह रत्न आपके स्वभाव को शांत और मिलनसार बनाएगा। आपके विवादों से दूर रखेगा। इसकी शुभता से आपका नैतिक आचरण अच्छा रहेगा। आप धार्मिक और

श्रद्धालु स्वभाव के होंगे। हीरे रत्न की शक्तियां आपकी दान पुण्य में रुचि बनाए रखेंगी। हीरे का शुभ प्रभाव से आप अच्छे वक्ता होंगे। धन-दौलत की आपको कोई कमी नहीं होगी। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। गायन, वादन, साहित्य रचना, चित्रकारी जैसी ललित कलाओं में आपकी अच्छी रुचि जागृत होगी।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। शुक्र रत्न आपको सुख-सुविधा युक्त वाहन, साज सज्जा युक्त घर एवं भूमि-भवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। इसकी शुभता से आप संचित धन एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति में अनुकूल फल दिला सकता है। हीरा रत्न शुक्र का रत्न होने के कारण आपको आकर्षक बना सकता है। शुक्र रत्न हीरा आपको धर्म मार्ग से जोड़ेगा, पुण्य, भाग्यवर्धक, गुरु, तीर्थ यात्रा, पिता का सुख एवं दूर स्थानों की यात्राएं करा सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप नीलीभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वादशेश है। शनि की शुभता में वृद्धि करने के लिए आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न शनि का रत्न होने के कारण आपको निरोगी, स्वस्थ और शारीरिक कुशलता दे सकता है। इस रत्न को आप अपने जीवन रत्न के रूप में भी धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न की शुभता से आपके व्यर्थ व्यय नियंत्रित रहेंगे। अस्पताल व जेल इत्यादि क्षेत्रों से आपको परेशानी अधिक नहीं होगी। शनि रत्न नीलम का प्रभाव आपकी निद्रा सुख को भी बढ़ाएगा। समुद्रिक यात्रा, विदेश यात्रा का सुख भी यह रत्न आपको दे सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने से आपको भूमि-भवन सुख की प्राप्ति होगी। मंगल की यह स्थिति मंगलिक योग बनाती है। मूंगा रत्न शुभ होकर संतान सुख एवं जन्म स्थान से दूर रखेगा। साहस और जोश से किये गये सभी कार्यों में आपको सफलता की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न आपकी मातृ श्रद्धा को बढ़ायेगा। इस भाव से मंगल सप्तम, दशम एवं एकादश भाव को देख रहे हैं। रत्न का प्रभाव इन भावों की शुभता में वृद्धि व अशुभता को कम करेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं दशमेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर सकते हैं। यह मूंगा सेवकों एवं सहोदरों से आपके संबंध मजबूत कर सकता है। रत्न शुभता से आपको कंप्यूटर तकनीक एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में शुभ फल प्रदान कर सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए आजीविका क्षेत्र का रत्न है। अतः इस रत्न को धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप यह रत्न धारण कर अपनी नेतृत्व योग्यता, प्रभुता, व्यापार, अधिकार, राज्य एवं साहस भाव में वृद्धि कर शुभ फल प्राप्त कर सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूठी में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का 9 माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। बुध रत्न पन्ना धारण कर आप शिक्षा क्षेत्र में योग्यता से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। रत्न शुभता से आपके बुद्धिबल का विकास हो सकता है। आप की स्मरण शक्ति प्रबल हो सकती है। यह रत्न आपकी विद्या ग्रहण शक्ति का विकास कर सकता है। बुध रत्न आपके लिए शुभ रत्न है तथा इसकी शुभता से आपके संतान सुख में भी वृद्धि होगी। पन्ना रत्न आपके आत्मविश्वास को प्रबल, प्रबंध क्षमता उत्तम, गणितीय योग्यता उत्तम, नियोजन कुशलता श्रेष्ठ रख सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का 9 माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को अच्छा रख, आपको निरोगी बनायेगा। आप मधुरभाषी और सदाचारी बनेंगे। रत्न धारण से आप पराक्रमी, विवेकवान और उदार बनेंगे। एवं रत्न शुभता से आप अच्छे कर्म करने वाले, लोकमान्य और प्रतापी बनेंगे। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शत्रुहंता और अजात शत्रु होंगे। यह रत्न आपको वाद-विवाद में भी विजयी करेगा। पुखराज शुभता से भाई-बहनों और मामा सुख मिलेगा। रत्न प्रभाव से आपको अच्छे नौकर चाकर मिलेंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में गुरु दवित्तीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है।

आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर सकते हैं। पुखराज रत्न की शुभता से आपके धन, लाभ व उन्नति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपके बड़ी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी एवं शुभ चिन्तक भी प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव आपको उत्तम आय वाला, शूर, निरोगी, स्वस्थ, धनी, दीर्घायु, स्थिर संपत्ति वाला तथा अनेक आयामों से सौभाग्यशाली कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य रत्न माणिक्य आपके लिए शुभ रत्न है। अतः आप माणिक्य रत्न धारण करें। माणिक्य रत्न शुभता आपको लम्बी दूरी की यात्राएं करवाएगी। धर्म-कर्म एवं परोपकार से जुड़े कार्यों में आपकी सहभागिता बढ़ेगी। रत्न प्रभाव आपको अपने परिवार के अत्यधिक निकट लायेगा। पिता से संबंध मधुर होकर मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम फल देगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति में माणिक्य रत्न शुभ फलदायक रत्न है। रत्न प्रभाव से विदेश गमन के योग बन सकते हैं।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न की शुभता से आपको स्वास्थ्य अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। आप तेजस्वी बन सकते हैं। यह रत्न आपको शक्तिशाली बना सकता है। दांपत्य जीवन को आनन्दमय बनाए रखने के लिए भी आप माणिक्य रत्न धारण कर सकते हैं। सप्तम भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण सूर्य आपको स्वतंत्र व्यापार करने का गुण दे सकता है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न होने के कारण आपको सरकारी क्षेत्रों में अनुकूलता देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम 9 माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखरी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छठे भाव में स्थित है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप स्वयं को निरोगी बनाए रख सकते हैं। आपके अपने भाईयों से संबंध मधुर रहेंगे। यह रत्न आपको गुणवान और दृढ प्रतिज्ञ व्यक्ति बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपको विद्या के कारण यश देगा। रत्न शुभता से आप अपने शत्रुओं को नष्ट करने वाले और विभिन्न विवादों में विजय प्राप्त करेंगे। लहसुनिया रत्न आपको अपने जीवन काल में श्रेष्ठ पद दिलाएगा। ननिहाल से आदर सम्मान प्राप्त होगा।

केतु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृ तज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करना आपके मन में भ्रम दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके सुख चैन में कमी हो सकती है। आपके दिमाग में अनेक भ्रान्तियां जन्म ले सकती है। उन्नतिशील होने के लिए आप अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकते हैं। अनेक योजनाएं आपके मस्तिष्क में निर्मित हो सकती है। यह रत्न आपके दिमाग को अत्यधिक

क्रियाशील बनाए रखेगा। गोमेद रत्न प्रभाव से आप बढ़ चढ़ कर बातें करने वाले हो सकते हैं। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग दे सकता है। गोमेद रत्न आपको वैचारिक अस्थिरता दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको पिता को सुख भी कम ही मिल पाएगा। कार्यों में अनिष्टता का भाव प्रभावी हो सकता है।

राहु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से विदेशी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय बाधित होगी। आपको भाग्योदय के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी दयालुता भाव में भी कमी करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आपके बड़े भाई बहनों की संख्या में कमी हो सकती है। इस कारण आप अपने भाई बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। रत्न प्रतिकूलता आपके धन में कमी का कारण बन सकती है। चिकित्सा जगत, औजारों, यंत्रों व हथियारों के निर्माण क्षेत्रों में आपकी विशेषज्ञता प्राप्ति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपमें यांत्रिकी सम्बंधित ज्ञान की कमी कर रहा है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आप की भाग्योन्नति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। रत्न प्रभाव आपकी लोकप्रियता, धार्मिकता एवं सरकारी सम्मान में कमी कर सकता है। रत्न धारण आपको कर्म की अपेक्षा भाग्यवादिता की ओर उन्मुख कर सकता है। विदेश यात्राओं में धन हानि दे सकता है। जीवन काल में आपके द्वारा अर्जित संपत्ति में भी कमी आ सकती है। मोती रत्न प्रभाव से आपके स्वभाव की चंचलता में वृद्धि हो सकती है। दया, सेवा आदि कार्यों में आपकी रुचि कम हो सकती है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती आपको शारीरिक रूप से कमजोर कर सकता है। इस रत्न प्रभाव से आपका रुग्ण शरीर व शीत विकारयुक्त हो सकता है। मोती रत्न आपको भय व चिंताग्रस्त कर सकता है। छठे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण मोती आपको शत्रुओं पर संघर्ष के बाद विजय देगा। कभी कभी आप अपने शत्रुओं को कमजोर समझकर पूर्ण शक्ति से विरोध नहीं करते हैं। रत्न धारण से आपको ननिहाल पक्ष से हानि की स्थिति बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको जीवन साथी से वैचारिक मतभेद दे सकता है। चंद्र रत्न मोती पहनने पर आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि

(27/01/2025 - 28/01/2044)

शनि की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(28/01/2044 - 27/01/2061)

बुध की दशा में आपका हीरा, पन्ना व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, माणिक्य, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(27/01/2061 - 28/01/2068)

केतु की दशा में आपका हीरा व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, नीलम, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(28/01/2068 - 28/01/2088)

शुक्र की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पुखराज, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(28/01/2088 - 27/01/2094)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, माणिक्य, पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(27/01/2094 - 29/01/2104)

चन्द्र की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, माणिक्य, पुखराज व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये ऐमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा

मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़तेरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता है। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई में जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता है। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते हैं, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता है। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता है। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता है।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा है।

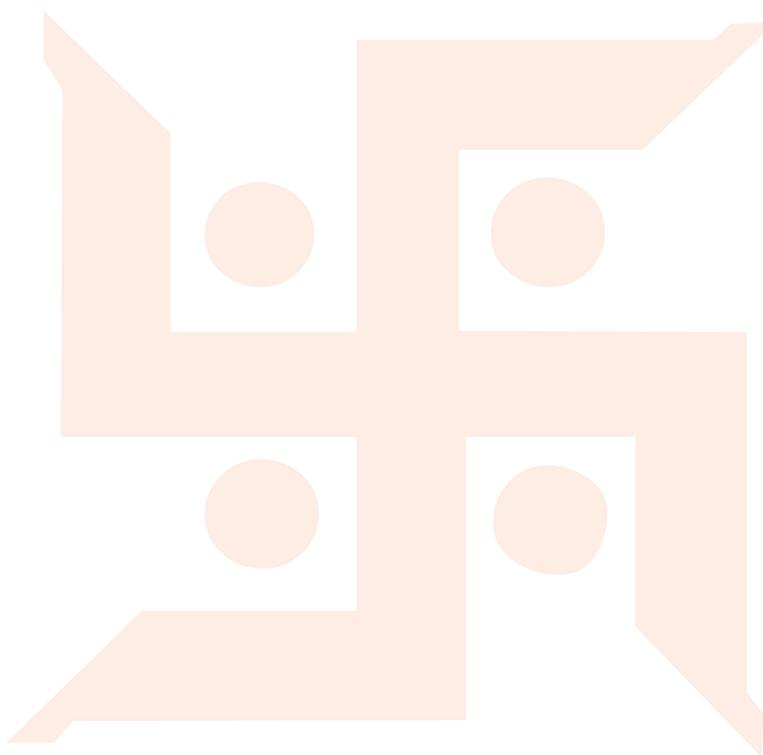
आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित है, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृत्तियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते हैं। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 5, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से

छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

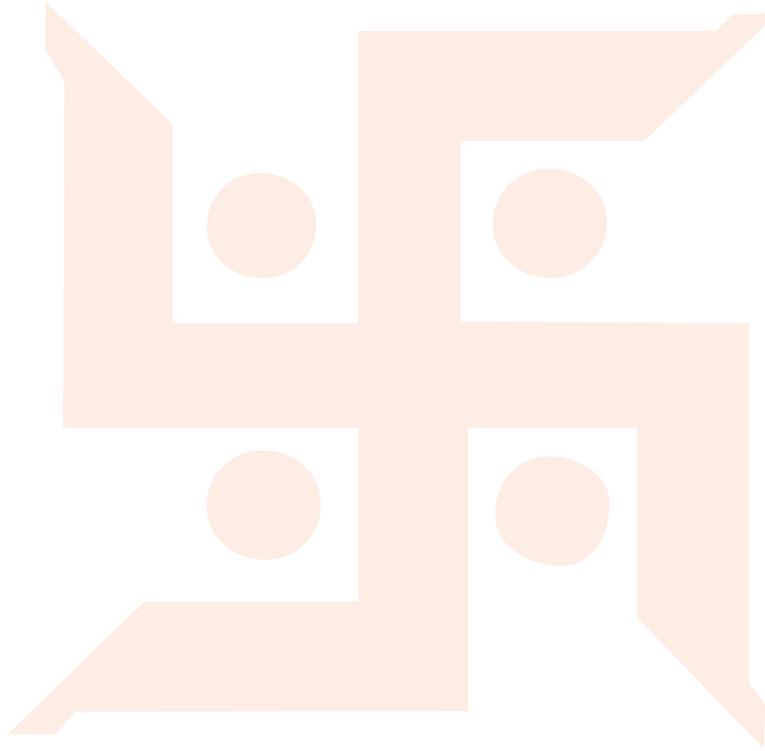
मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के शरीर में रोग व्याधि कभी लग जाती है, जिसमें नेत्र रोग, उदर रोग, अनिद्रा आदि सम्मिलित हैं। मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग थोड़ा बहुत परेशान रहता है और शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को अपने जन्मस्थान व देश से दूर रहना पड़ता है और बेवजह अनेक शत्रु हो जाते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में प्रायः सफल नहीं होते। झगड़ा-झंझट, वाद-विवाद में जातक को हार का सामना करना पड़ता है। जातक को न्यायालय से प्रायः नुकसान ही उठाना पड़ता है। जातक को अपनी जिन्दगी में समय-समय पर बदनाम होने का भय बना रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। कामों को सफल करने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है, पर सफलता संदिग्ध रहती है।

इसके प्रभाव से आमदनी से अधिक व्यय होने के कारण आर्थिक संकट घेर लेते हैं। जातक के प्रायः अनेक कर्जदार हो जाते हैं। कर्जा उतारने हेतु किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है पर थोड़ा बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है। मनोनुकूल काम पूरा होने में थोड़ा विलम्ब होता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और सामाजिक मान-सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मरणोपरान्त इनका नाम प्रसिद्ध होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अष्टारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक

करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 15 है। एक एवं पाँच के योग से आपका मूलांक 6 होगा। मूलांक 6 का अधिष्ठाता शुक्र है एवं एक का सूर्य तथा पाँच का बुध है। आपके जीवन में इन तीनों ग्रहों की काफी भूमिका रहेगी। मूलांक 6 के प्रभाव से आप एक सौन्दर्य प्रेमी, सुरुचिपूर्ण व्यवहार करने वाले, जनता के मध्य लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। ललित कलाओं में आपकी रुचि रहेगी एवं गान, वाद्य, गीत संगीत सुनने का शौक रहेगा। आप प्रत्येक कार्य में स्वच्छता पसन्द करेंगे। आपके अन्दर दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति रहेगी एवं उन्हें अपना बना लेने की कला रहेगी।

सूर्य के प्रभाव से आप जीवन में सदैव प्रकाशित रहना चाहेंगे। परोपकार में हिचकेंगे नहीं तथा अपने कार्य को निष्पक्ष एवं ईमानदारी से करेंगे। बुध के प्रभाव से आपमें वाणी चातुर्य का विकास होगा। आप सोच-समझकर वाणी व्यवहार करेंगे। तर्क शक्ति अच्छी होगी तथा दूसरों को अपनी बात सहज में समझाने की सामर्थ्य रहेगी। आपकी समाज सेवा के कार्यों में रुचि रहेगी। दान पुण्य के कार्य आपके हाथ से होंगे। विद्याध्यन आपके लिये हितकर है एवं अपने बुद्धि चातुर्य, विद्या बुद्धि के सहारे अपने जीवन में प्रारम्भ से ही सफलता अर्जित करेंगे। एकाध असफलताएँ भी मिलेंगी। लेकिन इनसे आप बिना विचलित हुये अपने जीवन के लक्ष्य पर पहुँचेंगे एवं घर परिवार, समाज में नाम कमायेंगे।

भाग्यांक नौ का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगे। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगे, जहाँ आपकी हकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगे। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो। विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगे। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपका मूलांक 6 है तथा आपका भाग्यांक 9 है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र है तथा भाग्यांक 9 का स्वामी मंगल है। मूलांक 6 और भाग्यांक 9 के बीच मित्र संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के अच्छे फल प्राप्त होंगे। शुक्र-मंगल के योग से आप चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला में पारंगत रहेंगे। आपका रोजगार-व्यापार तकनीकी क्षेत्रों की किसी शाखा में हो सकता है, अथवा आप ज्ञान-विज्ञान के द्वारा अपने अंदर छिपी हुई कला का रोजगार में उपयोग करेंगे। युवा अवस्था से ही आप धन संग्रह की ओर उन्मुख होंगे एवं अपनी अपेक्षानुसार प्रचुर मात्रा में धन का संग्रह करेंगे। आधुनिक युग की भौतिक

सुख-संपदाओं की वस्तुएं एकत्रित करने में भी आप पीछे नहीं रहेंगे। आपका रुझान साहस भरे कार्यों की ओर अधिक होने से आप जो भी कार्य हाथ में लेंगे, उसे पूरा करने के पश्चात ही चैन से बैठेंगे। आपका भाग्य काफी अच्छा है तथा समयानुकूल श्रेष्ठ भाग्योदय आपको प्रौढ़ावस्था में प्राप्त होगा। समाज में आप एक कर्मठ एवं साहसी व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेंगे एवं विभिन्न संगठनों, समूहों में योगदान करेंगे तथा आवश्यकतानुसार समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान करेंगे।

आपका भाग्योदय 27 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 36 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 45 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 9 की मित्रता 3, 6 से है। अतः आपके जीवन में 3, 6, 9 के अंक विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए मार्च, जून, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 6 एवं भाग्यांक 9 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 3, 6, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 3, 6, 9 होता है वह आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75

6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरों से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं कूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुखर्ष, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

केतु

षष्ठभावे में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीडित एवं दुःखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचलता के भाव से युक्त रहते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये प्रारम्भ से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही पसंद करते हैं अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव रहता है परन्तु धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है। साथ ही आधुनिकता के भाव से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रुचि के साथ साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा किसी भी प्रकार से भेद भाव की भावना इनमें नहीं रहती है अध्ययन के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल नेतृत्व प्राप्त करने में भी सफल रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश कार्य कलापों को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे परन्तु मन में स्थिरता कम ही रहेगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आप सूक्ष्म दृष्टि के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप प्रारंभ से ही पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के रहेंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के द्वारा जीवन में सफलताएं अर्जित करेंगे। धनैश्वर्य की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके इच्छित धन होगा।

समाज में आप एक सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा सपरिवार उनका उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रुचिशील दौरान आपकी- उत्कृष्ट कार्यों से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। साथ ही यदा कदा आप आवश्यकता से अधिक व्यय करेंगे। अतः ऐसी प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करने में समर्थ होंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा स्वप्न दृष्टा प्रवृत्ति भी होगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा अपनी वाणी को स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कहेंगे। साथ ही आप अत्यंत ही उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के प्रति आप पूर्ण सचेष्ट रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र होगा तथा अजनबी व्यक्ति भी प्रथम मुलाकात में ही आपसे प्रभावित होकर आपका मित्र बनने के लिए उत्सुक हो जाएगा। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार ही अपने वक्तव्य को नया स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखेंगे जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभावित रहेंगे परन्तु यदा कदा आप में आत्म विश्वास की अल्पता होगी।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आप की अच्छी रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप अपने विचारों को समय समय पर परिवर्तित करते रहेंगे इसका मूल उद्देश्य पारिवारिक जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करना रहेगा। आपको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मीठा एवं नमकीन स्वाद आपके विशेष प्रिय रहेंगे। सामान्यतया आपके स्वाद अन्य जनों से भिन्न रहेंगे। आपकी वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा अन्य जन आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रकृतिक दृष्यों का अवलोकन करना आपको प्रिय लगेगा। जमीन, जायदाद, वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों का भी आप अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति एवं माता पिता की पैतृक सम्पत्ति से भी आप धन वान होंगे तथा सुखपूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मेष राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा बौद्धिक कार्य सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति भी होंगे। जीवन में भाईयों के सुख एवं सहयोग को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। यद्यपि उनका स्वभाव तेज होगा परन्तु बुद्धिमता से युक्त दौरान आपकी- प्रति वे आज्ञाकारी एवं कर्तव्य परायण रहेंगे। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे। यदा कदा आप लोगों के मध्य वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप हृदय से विशाल होंगे तथा अन्य जनों के प्रति आपके मन में दया तथा सहानुभूति की भावना विद्यमान रहेगी। इसके साथ ही आप अपने ही तरीके से सोचेंगे तथा उसी को कार्य रूप में परिणित करेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप आधुनिक संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन , वाहन, दूरदर्शन आदि उपकरणों से भी युक्त रहेंगे। संगीत या कला आदि के प्रति भी आपके मन में रुचि रहेगी तथा समयानुसार आप इससे मनोरंजन करेंगे। दूर समीप की यात्राओं से आपको समय समय पर लाभ होगा तथा इससे आपकी ख्याति में वृद्धि होगी। अच्छी एवं ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों को पढ़ने में आपकी रुचि रहेगी साथ ही लेखन कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सज्जनों से मित्रता करने वाले परोपकारी तथा विद्वान होंगे एवं सरकार से समय समय पर सम्मान प्राप्त करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा मंगल भी दशमेश होकर चतुर्थभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे। लेकिन इनको प्राप्त करने में आपको परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। आपका सामाजिक स्तर भी बना रहेगा एवं लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं वांछित सम्मान भी प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यवान व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी। भाइयों के प्रभाव एवं सहयोग से आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की भी प्राप्ति हो सकती है। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः अवसरानुकूल इस पर आपको निवेश करते रहना चाहिए।

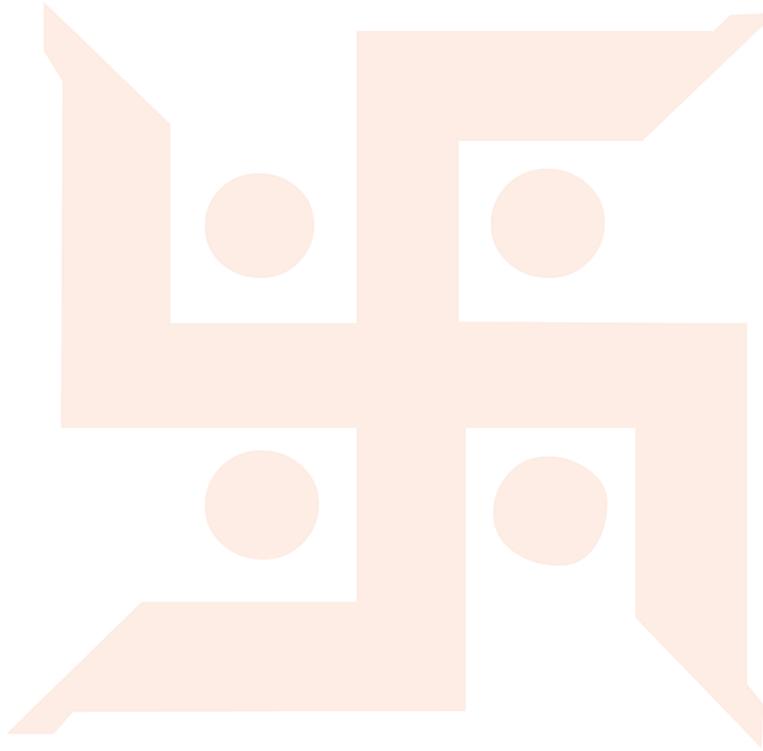
आपको जीवन में अच्छे आवास की प्राप्ति होगी तथा यह सुन्दर, आकर्षक एवं आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होगा। भौतिक उपकरणों की भी इसमें अधिकता रहेगी तथा आप स्वयं इसकी स्वच्छता एवं आकर्षण बनाए रखने में तत्पर होंगे एवं अन्य जनों को भी समय समय पर प्रोत्साहित करते रहेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आपको मिलेगा तथा युवावस्था से ही आप अपने वाहन का सुख अर्जित करने में सफल हो जाएंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं आकर्षक व्यक्तित्व की महिला होंगी तथा उनके विचार भी आधुनिक होंगे। परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी लोगों का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं अपनी ओर से कोई कभी नहीं होने देंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व एवं स्नेह का भाव होगा तथा समयानुसार आपको अपना आर्थिक तथा नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं आपकी उन्नति में भी उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी माताके आज्ञाकारी होंगे तथा सुख दुःख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे लेकिन आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में प्रारंभ से ही आपको अच्छी सफलता अर्जित करने के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा तथापि छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करेंगे लेकिन स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी इसमें वांछित सफलता की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय कोई तकनीकी पाठ्यक्रम का डिप्लोमा आदि करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता की प्राप्ति हो सकती है। जिससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य भी उज्ज्वल बनेगा।

चतुर्थभाव में मंगल के प्रभाव से मध्यावस्था में आपको रक्तचाप या हृदय संबंधी

परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः यदि प्रारंभ से ही खान-पान पर उचित नियंत्रण रखा जाय तो ऐसी समस्याओं से सुरक्षित रहेंगे तथा सामान्य समय सुखपूर्वक व्यतीत होगा।



प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक एवं अन्य कार्य-कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं उचित निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी जिससे आप अवसरानुकूल वांछित लाभ एवं सफलता प्राप्त करेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान अपनी बुद्धिमता से शीघ्र एवं सुगमता से सम्पन्न करेंगे फलतः अन्य सामाजिक लोग भी आपसे प्रभावित होंगे एवं यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा इनका परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे तथा आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

पंचमभाव में मिथुन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा आपका प्रेम भावनात्मक आकर्षण से युक्त होगा। इस क्षेत्र में आप मर्यादा एवं नैतिकता का भी यत्नपूर्वक पालन करेंगे एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। अतः आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में भी परिणित हो सकता है जिससे आपका दाम्पत्य जवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर पुत्र एवं कन्या दोनों की प्राप्ति होगी आपकी संतति बुद्धिमान, पराक्रमी, तेजस्वी एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में समान्यतया तत्पर होंगे परन्तु उनकी प्रवृत्ति स्वच्छन्द एवं स्वतन्त्र होगी। अतः यदा-कदा वे बिना माता-पिता की सलाह से भी कोई कार्य सम्पन्न कर सकते हैं लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता भाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपकी पूरी सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली सिद्ध होंगे।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं परिश्रमी होगी तथा प्रारंभ से ही वांछित सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे एवं आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगे जिससे वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में नित्य योग्य सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त वे विनम्र सक्रिय, व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य-कलापों को करने वाले होंगे जिससे अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे तथा वांछित स्नेह प्रदान करेंगे। इससे आपके सम्मान में भी वृद्धि होगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से रक्त सम्बन्धियों या मित्रों से आपको यदा कदा विरोध या शत्रुता का सामना करना पड़ेगा तथा वे अकारण ही आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आपकी खुशहाली एवं वैभवता को देखकर लोग ईर्ष्यालु होंगे आपके शत्रु आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहेंगे तथा आपकी सामाजिक छवि को भी धूमिल करना चाहेंगे। लेकिन आप अपनी चतुराई बुद्धिमता, विनम्रता एवं कूटनीति से शत्रुवर्ग को पराजित तथा उत्पन्न समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में सफल होंगे।

आपके सेवक ईमानदारी तथा निष्ठापूर्वक आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे साथ ही आपके लिए वे आज्ञाकारी तथा विश्वासपात्र भी रहेंगे परन्तु यदि उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो वे चोरी आदि भी कर सकते हैं अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही कई बार वे आपके गुप्त रहस्यों को भी वे अपनी बातूनी प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों से कह सकते हैं। इस प्रकार हो सकता है कि आप समय समय पर नौकरों का परिवर्तन करते रहें।

आप अपने व्यय पर नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे क्योंकि आप धन संग्रह के प्रति विशेष रुचि रखेंगे। यही कारण है कि आप सबसे मित्रतापूर्ण संबंध रखने में प्रायः असफल से रहेंगे। साथ ही यदा कदा अनावश्यक पूंजी निवेश के कारण ऋण आदि की भी स्थिति आ सकती है तथा ऋण दाता द्वारा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके मामा मामी प्रवृत्ति से अच्छे व्यक्ति होंगे तथा आपके साथ उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। यद्यपि मामी से आपको पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु मामा से आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप जीवन में फौजदारी मुकद्दमे से सम्बन्धित रहेंगे तथा इन पर आपका काफी समय एवं धन बर्बाद होगा परन्तु अपनी बुद्धिमता तथा अन्य गुप्त सूत्रों के द्वारा अन्त में विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम स्वास्थ्य के लिए दैनिक खान पान में सावधानी रखें तथा मानसिक चिन्ताओं से भी दूर ही रहें अन्यथा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त कर सकते हैं।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है तथा उसमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके स्वभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। सांसारिक कार्य कलापों को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेगी तथा अपने साहसिक कार्यों से अन्य जनों को प्रभावित करेगी। वे अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेगी जिससे परिवार एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी एवं उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी तथा शरीर के अन्य अंग पुष्टता से युक्त रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी आकर्षण आएगा। पाश्चात्य समाज एवं संस्कृति के प्रति भी उनका रुझान रहेगा। भौतिकता के प्रति भी उनका आकर्षण होगा एवं सुंदर तथा कलात्मक वस्तुएं प्रिय होंगी तथा उनके संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में सिंह राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा इसमें अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा या आप स्वयं भी प्रेम विवाह कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण एवं प्रेम की भावना भी होगी आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा एक दूसरे के सहयोग से सांसारिक कार्यों को पूर्ण करेंगे। इससे आपस में प्रेम विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह के समय दहेज के रूप में आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा एक दूसरे से सम्मान एवं सहयोग अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा की भावना होगी तथा उनका सुख दुख में पूरा ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उन्हें वांछित सम्मान देंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अन्तर्ज्ञा शक्ति अच्छी रहेगी तथा आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां सत्य होंगी अध्यात्म, ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे लेकिन व्यवहारिक के ज्ञान की अपेक्षा अंतर्ज्ञा शक्ति ही अधिक सहायक सिद्ध होगी। आपके अधिकांश कार्य अध्यात्म के अनुसार ही सम्पन्न होंगे अतः कई बार आप वास्तविकता से दूर हो जाएंगे। आपको न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी परन्तु बाद में आपको छोड़नी पड़ेगी जिससे आपको काफी मानसिक कष्ट होगा तथा इसके कारण वातावरण अशान्त होगा। साथ ही पुनः जायदाद जोड़ने के लिए आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। बन्धु एवं सम्बन्धियों से भी जायदाद के बारे में विवाद रहेगा जिससे परस्पर बन्धुत्व के भाव की अपेक्षा वैमनस्य का भाव ही उत्पन्न होगा।

शादी के समय आपको किंचित धन आभूषण या अन्य चीजें दहेज के रूप में प्राप्त हो सकती हैं परन्तु आपके ससुराल वाले बार बार इस दहेज के बारे में आपको याद दिलाएंगे जिससे आपकी आधी खुशी उनके इस व्यवहार से खत्म हो जाएगी। बीमे के रूप में आपको विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं होगी यह केवल जितनी हानि या नुकसान हुआ है उसी के लिए पर्याप्त होगी। आपके जीवन में कोई विशेष दुर्घटना या चोरी आदि का योग नहीं है यदि ये भी घटित भी होती है तो इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप आदर्श एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में काफी श्रद्धा रहेगी। आप दिखावे में विश्वास नहीं करते तथा जो कुछ भी करेंगे हृदय से सच्ची भावना से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मनुष्य मात्र की भलाई के लिए भी कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। दैनिक जीवन में आप पूजा तथा योग एवं धर्मानिष्ठ कार्य नित्य करते रहेंगे। साथ ही मानसिक एवं आत्मिक शान्ति के लिए तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे। धार्मिक उत्सवों के प्रति आपकी आदर की भावना रहेगी तथा अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों का भी पूर्ण सम्मान करेंगे साथ ही पारिवारिक परम्परा, रीति रिवाजों के अनुसार धर्म का अनुपालन करेंगे।

आप ईश्वर की सत्ता में विश्वास करेंगे तथा जीवन में विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे। साथ ही भाग्य भी आपका प्रबल रहेगा। योग ध्यान या आध्यात्म संबन्धी महत्वपूर्ण ग्रंथों का आप अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त ज्योतिष आदि में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की प्रबलता से सही भविष्यवाणियां करने में भी समर्थ रहेंगे।

आप धार्मिक तथा व्यावसायिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए जीवन में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न करेंगे तथा इनसे आपको मान सम्मान ख्याति तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा साथ ही सामाजिक जनों के परोपकार संबन्धी कार्य भी सम्पन्न करेंगे लेकिन कभी कभी स्वार्थ वश कंजूसी का भी प्रदर्शन करेंगे लेकिन यह अल्प मात्रा में होगा। आप एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा आपके अनुयायी या सहायक भी रहेंगे पौत्रों से आपको पूर्ण सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के प्रभाव से इस जीवन को ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपकी जन्म कुंडली में जन्म समय में दशमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। वृश्चिक राशि जलतत्व युक्त राशि है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया से युक्त होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी साथ ही कार्यक्षेत्र में आप समय समय पर परिवर्तन करने के भी इच्छुक रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा जिससे आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र औषधि विज्ञान, डाक्टर, इंजीनियर, होटल प्रबंधक, या कर्मचारी, पुलिस सी आई डी, सेना, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, शस्त्र निर्माता तथा राजनीति का क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में आजीविका प्रारंभ करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही कार्य करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए शस्त्रों का व्यापार सुवर्ण आदि धातु कार्य विद्युत उपकरणों का क्रय विक्रय या निर्माण औषधि क्रय विक्रय या कैमिस्ट रासायनिक पदार्थ या होटल का स्वामित्व से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा इस में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता के लिए उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार का आरंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको वांछित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे साथ ही समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त होगी। आप किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य हो सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य वे आदरणीय होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चस्तर पर शिक्षा का यत्नपूर्वक प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता रहेगी। आप में आज्ञाकारिता का भाव भी विद्यमान होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में धनु राशि स्थित है जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप पराकामी स्वस्थ तथा महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा जीवन में परिश्रम एवं योग्यता से इच्छाओं तथा आकाक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप जीवन में समस्त सुख साधनों से युक्त होंगे तथा निरन्तर रूप से आय एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। आप शिक्षा, बैंक, ब्याज या प्रशासनिक कार्यों से इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे या तो आप इन क्षेत्रों में कार्यरत होंगे अथवा आपको इनसे संबंधित विभागों एवं लोगों से समय समय पर इच्छित लाभ प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इनके द्वारा आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

आपका बड़े भाई से पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे आपको इच्छित सुख सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा वे आपका पुत्रवत् पालन करेंगे। जीवन में आपको वे आर्थिक रूप से निर्भर बनाएंगे तथा समय समय पर आपका मार्ग निर्देशन भी करते रहेंगे। आप भी उनका पितृवत मान सम्मान करेंगे। आपको विद्वान मित्रों की हमेशा इच्छा रहेगी जो जीवन दर्शन के विषय में आपका मार्ग दर्शन कर सकें अतः विद्वान एवं शिक्षित लोग ही अधिक रूप से आपके मित्र होंगे। साथ ही अवस्था के साथ साथ आप युवावस्था के लोगों को उपदेश भी प्रदान करेंगे। आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र एवं समाज में प्रसिद्ध तथा आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको अपना मित्र समझेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा तथा समस्त सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम के फलस्वरूप किसी भी माध्यम के द्वारा इच्छित उन्नति सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी पुरुष होंगे तथा आर्थिक एवं अन्य क्षेत्र की उन्नति के लिए खतरे उठाने में भी नहीं झिझकेंगे जिससे आपको अन्ततः लाभ ही होगा। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी ही रहेगी तथा आर्थिक सुदृढ़ता के कारण आप उन्मुक्त भाव से जीवन में आनन्द, सुख एवं शान्ति प्राप्त करने के लिए व्ययशील रहेंगे।

आप पारिवारिक जनों के प्रति पूर्ण समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं रहन सहन, खान पान तथा अन्यत्र उच्च स्तर बनाए रखने के लिए प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे साथ ही अपने सामाजिक स्तर की वृद्धि करने के लिए भी आपको काफी व्यय करना पड़ेगा। चूंकि आपके पास धन एवं सम्मान की कमी नहीं रहेगी अतः आप उपरोक्त क्षेत्र में आनन्द प्राप्त करेंगे। साथ ही अपरिचित लोगों तथा सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं अवसरनुसार उन्हें उचित आर्थिक सहयोग देंगे जिससे लोग आपकी दानशीलता से प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपनी संगठन शक्ति से जीवन में इच्छित सफलता अर्जित करेंगे।

आप व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित दूर समीप की यात्राएं करेंगे। इसी संदर्भ में आप विदेश की यात्रा भी करेंगे। यद्यपि इसमें व्यय अधिक परन्तु भविष्य में आपको उचित लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्त के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव सेआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान काशुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ, खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा

करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रुचि बनी रहेगी और दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें। अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वादश भाव में रहेंगे। वक्रीगुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लगातार प्रयास करने के बावजूद भी व्यापार में सफलता की उम्मीद कम ही रहेगी। शनि, राहु व गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रु आपके कार्यों में रुकावटें डाल जा सकते हैं। बड़े अधिकारी या वरिष्ठ लोगों का भी सहयोग नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उच्च अधिकारियों द्वारा आपको प्रताड़ित भी किया जा सकता है।

जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है। मित्र या पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा। किसी के साथ मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। 26 नवम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो ज्यादा नुकसान हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत से ही धनागम के सारे स्रोत प्रभावित होंगे। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिसमें पहले से संचित किया हुआ धन भी खर्च हो सकता है जिसके फलस्वरूप आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। बीमारी दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी आय के मार्ग खोल सकती है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में आपकी पत्नी एवं भाईयों का भी मुख्य सहयोग होगा। 26 नवम्बर के बाद फिर से समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको अपने अनावश्यक खर्च पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी हो सकती है। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आपको मातुल पक्ष का भी सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण होगा, जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। तृतीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से समाज में आपका मान-सम्मान और अधिक बढ़ेगा। भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। वर्ष का अंतिम माह अधिक शुभ नहीं रहेगा।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

जून के बाद आपके बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिल सकता है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है, परन्तु वर्ष का अंतिम माह शुभ नहीं रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लग्न स्थान का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय आपको अधिक प्रभावित कर सकता है ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है जिसके प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग

लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है। यदि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें भी आपको सफलता मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

जून के बाद तृतीय स्थानपर शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी होगी। यात्रा करते समय पूर्ण सावधानी बरतें, क्योंकि मुख्य ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। चाह कर भी आप धार्मिक कार्य नहीं कर पाएंगे। अधिक आलस्य के कारण भी आपकी नित्य क्रिया प्रभावित हो सकती है। जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन राहु का दान करें और प्रत्येक दिन राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान का शनि आपके कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा। फरवरी के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। कम समय में बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि एकादश स्थान का राहु अचानक लाभ कराता रहेगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। फरवरी से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है। 24 मई के बाद एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराने के प्रबल योग बना रहे हैं।

24 जुलाई के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। बच्चे या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अच्छा यही होगा की विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं। फरवरी के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे एवं परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे। सुबह सुबह व्यायाम अथवा योगा करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। फरवरी से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत बढ़िया रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

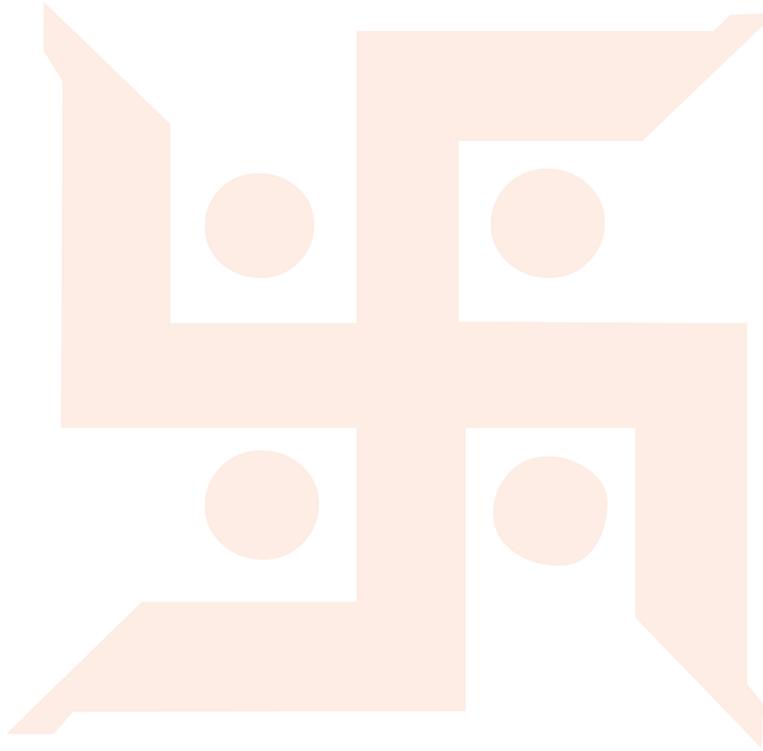
वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 23 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। व्यावसायिक व्यक्ति की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। फरवरी के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गि होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के साथ होगा। समय समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। आप अपने दैनिक कार्य स्फूर्ति से करेंगे और अपने कार्यक्षेत्र कुछ विशेष करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। एकादश स्थान का राहु अचानक धन लाभ करा सकता है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे।

29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आप पर कुछ अनावश्यक खर्च आ सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। शनि ग्रह के गोचर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय बहुत उपयुक्त है तथा उनकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। बच्चों की उन्नति के भी योग हैं।

05 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक माहौल खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना लेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य

भी प्रभावित हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के बारे में शुभ समाचर मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपको उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करनी चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक विकसित होगी। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

08 अगस्त के बाद शनि का गोचर प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे परन्तु करियर में सफलता पाने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु के गोचर के बाद समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहता है उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। उन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण होगा। यह

परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। 25 अगस्त से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। 25 अगस्त के बाद गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता करें।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। भले ही इस वर्ष कुछ ऐसे माह भी होंगे जब आपको मामूली परेशानी का सामना करना होगा लेकिन आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस साल की शुरुआत से ही आप अपनी काबिलियत को साबित कर सकने में कामयाब होंगे। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा किन्तु आप अपनी लगन और कार्यकुशलता से सब मुश्किलों का हल सकारात्मक रूप से निकाल लेंगे।

23 सितम्बर के बाद आपके अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे

धन संपत्ति

यह साल आर्थिक रूप से अच्छा रहेगा। व्यावसायिक स्तर पर जोखिम उठाने में कोई नुकसान नहीं होगा। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो 17 अप्रैल के बाद लोन मिल जाएगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर उसमें निवेश करें।

धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 1 मई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत शुभ है। पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग

मिलेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

17 अप्रैल के बाद चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू वातावरण में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। पंचम भाव पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को कुछ और इंतजार करना पड़ सकता है।

1 मई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। कार्यों के प्रति सक्रिय और अति उत्साहित होने के चलते आप पूरे साल एकदम तंदरुस्त रहेंगे। सुबह-शाम टहलना व नियमित व्यायाम अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा।

17 अप्रैल के बाद मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। चिंता करने से जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आपका ही प्रदर्शन कमजोर साबित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। 1 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से हट सकता है। आपको प्रतियोगिता परीक्षा एवं अपने करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। इस समय किया गया परिश्रम आने वाले समय में आपको लाभ देने वाला होगा। अतः आप अपने पूर्ण मन से

प्रतियोगिता परिक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 17 अप्रैल को शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

1 मई से आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होने के प्रबल योग बन रहे हैं। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नति कारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। इस समय आप अधिक पुण्य का कार्य करेंगे। 1 मई से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे जिससे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए उत्तम रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली खासियत जो आप में है, आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आनंद भी लेंगे। अगस्त के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत अच्छा रहेगा। आपकी कुण्डली में दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। आपके आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपको कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए और उद्देश्य पूर्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

9 अगस्त के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय का नया साधन मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। पारिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। 9 अगस्त से घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा।

15 अक्टूबर के बाद अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हो सकता है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। समाज में भी आपके पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपका आत्म सम्मान बढ़ेगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे की शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। 18 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपकी दृढ़ निश्चयता और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण ही आप एकदम स्वस्थ रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

18 फरवरी से गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने के कारण आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 18 फरवरी के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

राहु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 15 अक्टूबर के बाद व्यावसायिक व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

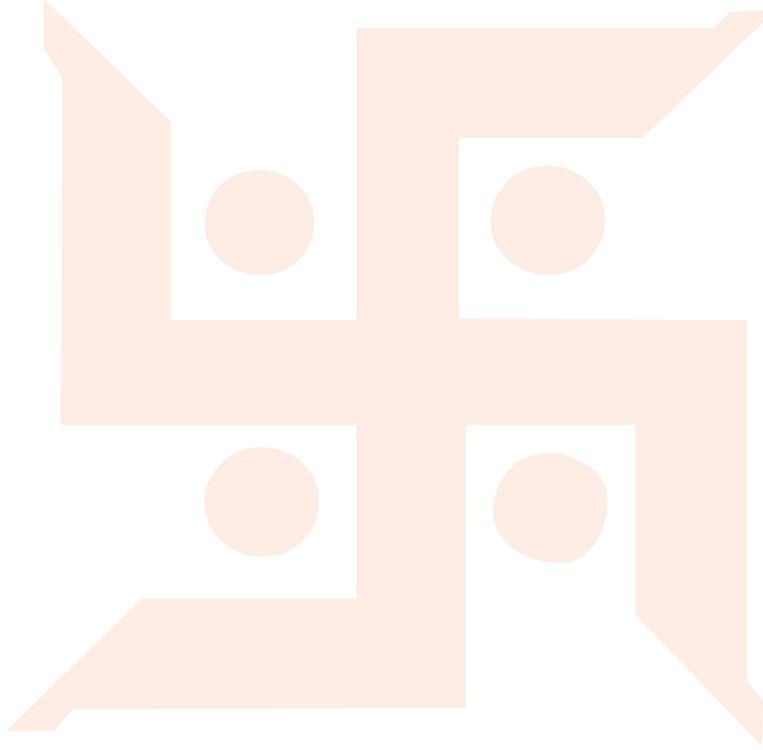
इस वर्ष कोई विशेष यात्रा के योग नहीं बन रहे। 18 फरवरी के बाद आपकी छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

राहु के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र स्थापित कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।



वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु नमव भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुएकादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं एकादश में आजाएंगे और पुनः मार्गशीर्ष होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं वह काबिले तारीफ है। 5 मार्च से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। 23 अक्टूबर से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगीपरन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए योजना निर्धारित करनी होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तमरहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 5 मार्च के बाद गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में आप सावधान रहें। किसी पर भी बहुत जल्दी विश्वास न करें। आपके अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं।

12 अगस्त से आपको भाईयों और मित्रोंकर अच्छा सहयोग मिलने के कारण फिर से धन संचय करने में लग जाएंगे। आपके संचित धन में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में आपको सभी इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 23 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़ीयानहींरहेगा। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसी

विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

12 अगस्त से सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव होने से आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली का योग बन रहा है। आपके भाई व मित्रों के लिए समय बहुत शुभ है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा। आपको प्रेम संबंधों में भी सफलता मिलेगी।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ के दो माह आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेंगे, परन्तु 5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके बच्चों का समय प्रभावित हो रहा है। 31 मई से पंचम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी।

उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 23 अक्टूबर से आपके बच्चों का समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 5 मार्च से द्वादश स्थान पर गुरु के गोचरीय प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए काफी अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आप शारीरिक आरोग्यता को प्राप्त करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकता है। 5 मार्च से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहें तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। 5 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होंगी।

12 अगस्त के बाद आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में

आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व लापरवाही के कारण आपकी दैनिक पूजा भी प्रभावित हो सकती है। 12 अगस्त से पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप मन्त्र जाप करेंगे। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं नवम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वादश में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। 18 मार्च के बाद वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा और आपको बन्धु-बान्धवों का पूरा सहयोग मिलेगा।

आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। वरिष्ठ अधिकारी आपके कार्यों से संतुष्ट रहेंगे। अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति के योग हैं। आप अपने व्यापार को ऊंचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, जिससे आपके पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चतुर और सूझ-बूझ भरे व्यक्ति हैं तो इसके चलते आप इन चुनौतियों को ही लाभकारी अवसरों में परिवर्तित कर सकते हैं।

लॉटरी, सट्टा व शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। धन संचय करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। यदि ऋण के लिए आवेदन दिया है तो वह भी मिल जाएगा। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु पैतृक संपत्ति के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीयस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे। परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगा। जिससे आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके

मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। अतः आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं वे गलत संगत में पड़ सकते हैं जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं। आपके बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो अपने लक्ष्य से उनका मन भटक सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गैस, अपच व पेट संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना प्रारम्भ हो जाएगा।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या पर ध्यान दें। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। वाहन चलाते समय व यात्रा करने समय सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च से व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

वर्ष के मध्य में एकादश स्थान का मंगल प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए काफी शुभ है। उनके करियर में सफलता के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय काफी शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के अच्छे योग बन रहे हैं। 18 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेंगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट होंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, भिखारियों को दान देना, धार्मिक स्थान पर भंडारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध हितकारी रहने वाला है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्त के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रह गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। अष्टम स्थान का राहु आपके व्यावसायिक जीवन में कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकता है, जिससे आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाइयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगा। अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए समय बहुत ही अनुकूल है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के मार्ग खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 28 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके परिवार वालों का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 12 अगस्त के बाद सप्तम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। शारीरिक अनुकूलता पर धन का व्यय होगा। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। पारिवारिक सुख सुविधा के लिए अधिक धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक दृष्टिकोण से उत्तम रहेगा। 28 मार्च के बाद आपके परिवार में

सदस्य वृद्धि के संकेत हैं। यह वृद्धि किसी के विवाह या शिशु जन्म से होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

आपके छोटे भाई-बहनों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध शुभ नहीं है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम एवं सुबह-सुबह टहलना आदि। वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप सेहत पर ध्यान नहीं देंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर अनावश्यक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर योगा आदि करना आपके लिए लाभप्रद है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहने वाला है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। ज्योतिष व गुप्त विद्या के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ सकती है।

जो व्यक्ति व्यवसाय के रूप में करियर खोज रहे हैं। उनके लिए शनि ग्रह का गोचर एक सुनहरा अवसर लेकर आ रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है, जिसमें आपको अच्छी उन्नति मिलेगी।

यात्रा-तबादला

28 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। कार्य व्यवसाय से संबंधित भी यात्राएं होती रहेंगी। 13 जुलाई के बाद द्वादश स्थान पर

शनि ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न करेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान-पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने पूजा घर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनि व बुधवार के दिन काली व नीली वस्तु का दान करें एवं राहु के निम्न मन्त्र का पाठ करें।

ॐ भ्रां भ्रीं भौं सः राहवे नमः।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि छे भव में और सिंह राशि का राहु सप्तम भव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वितीय भव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं तृतीय भव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वितीय भव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

6 अप्रैल के बाद आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझ कर ही धन का व्यवहार करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परन्तु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा जिससे पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 6 अप्रैल से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य

भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य उनका विवाह हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नहीं तो उसकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है। आप स्फूर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम या सुबह-सुबह टहलने जाना। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती है या प्रारम्भ हो सकती है। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योग करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यवसाय में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 6 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं

के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 6 अप्रैल से समय धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दुसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। जितना आप अच्छा कार्य करेंगे उतना ही आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन व पूजन करें। इसके प्रभाव से ग्रहजनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(27/01/2025 - 28/01/2044)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपके जीवन में यह 27/01/2025 को आरम्भ और 28/01/2044 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 11वें भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो अधिकांश लोगों में आतंक उत्पन्न करता है। हर क्षेत्र में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करना इसकी प्रवृत्ति है। यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 11वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि प्रथम, पंचम तथा अष्टम भावों पर है और यह उनके कार्य को सम्पादित कर रहा है। 11वा भाव, जिसमें यह स्थित है, मित्र, समुदाय, महत्त्वाकांक्षाओं, कामनाओं तथा उनकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, लाभ, खुशहाली, बड़े भाई, भाग्योदय आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 11वें भाव में स्थित है और अपने भाव अर्थात् कामनाओं इच्छाओं की पूर्ति के भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको किसी गम्भीर बीमारी अथवा दुर्घटना नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि की वर्तमानों दशा में आपकी इच्छाओं की पूर्ति, लाभ और धन का संग्रह होगा। आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा और जीवन के हर क्षेत्र में लाभ मिलेगा। किन्तु, आपके लक्ष्यों की पूर्ति में बाधाएं भी उत्पन्न करेगा जिन पर आप अपने भाइयों तथा मित्रों की सहायता से विजय प्राप्त करेंगे।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सफल होंगे और सरकारी स्रोतों से धन का उपार्जन करेंगे। आपके राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की अच्छी सम्भावना है जहाँ आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और पारिवारिक सुख-आनन्द का लाभ उठाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्च कम होंगे जो आज्ञाकारी होंगे और आपका आदर करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा के लिए यह दशा अनुकूल है। आप अपनी शिक्षा सफलता पूर्वक पूरी करेंगे और साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेंगे।

**अंतर्दशा :- शनि - शनि
(27/01/2025 - 31/01/2028)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/01/2025 को प्रारंभ होकर 28/01/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 27/01/2025 को प्रारंभ होकर 31/01/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। इसे यद्यपि अशुभ समझा जाता है, परंतु यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभ फल में देरी तो करता है, परंतु फल मिलता अवश्य है। एकादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 1, 5, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके अधीनस्थ बहुत से कर्मचारी काम कर सकते हैं। सरकार के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। आप आमोद-प्रमोद के शौकीन हैं, लेकिन इस अवधि में आपके मित्रों की संख्या में कमी आ सकती है। स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।
- पीपल को जल दें।

**अंतर्दशा :- शनि - बुध
(31/01/2028 - 10/10/2030)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 27/01/2025 को प्रारंभ होकर 28/01/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 31/01/2028 को प्रारंभ होकर 10/10/2030 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको सब कार्यों में सफलता मिलेगी। समाजसेवा, दान-धर्म और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। विभिन्न स्थानों से सम्मान प्राप्त होगा, साख अच्छी रहेगी। स्पष्टवादी होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शनि - केतु
(10/10/2030 - 19/11/2031)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/01/2025 को प्रारंभ होकर 28/01/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 10/10/2030 को प्रारंभ होकर 19/11/2031 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं; प्रसिद्ध बनेंगे। आपकी किसी से भी शत्रुता नहीं होगी। चरित्र में हास न होने दें। अतीन्द्रिय शक्ति का विकास हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

योग

अमलयोग

चन्द्राब्धोमन्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि ।
क्षमेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान् ।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 19-20 ॥

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु, चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है । फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे ।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः ।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः ।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात् ।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने ॥

॥ सारावली ॥ अ. 13/श्लोक 1, 4 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : बुध, शुक्र, चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे ।

भातृवृद्धि योग

भातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भातृणां वर्धनं भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो. -16 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है ।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र,मंगल

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-49 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कपटी योग

पापे कर्मेश्वरे सौख्ये कपटी पापवीक्षिते पापसंयुते ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-141 ॥

यदि जन्मपत्रिका में दशमेश पाप ग्रह के साथ सुख स्थान में हो तथा पाप दृष्ट या पाप युक्त हो तो जातक कपटी होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,मंगल

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कपटी हो ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।

शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-148 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमात्रीतिमान् भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-32 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,बुध

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-35 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

त्रिकालज्ञ योग

भृगौ सौम्यसमायुक्ते दृष्टे ताभ्यां शुभांशके ।
त्रिकालज्ञो भवेज्जीवे स्वांशे मृद्वंशसंयुते ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-53 ॥

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र बुध से युक्त हो, गुरु अपने नवांश में मृद्वंश से युक्त हो बुध शुक्र से दृष्ट हो तो त्रिकालज्ञ योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूत-भविष्य वर्तमान के ज्ञाता होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

प्रथम पुत्री प्राप्ति योग

स्त्रीराशौ स्त्रीग्रहे प्राप्ते स्त्रीभावे पुत्रनायके ।
दारिकां प्रथमं ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-55 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश स्त्री राशि में स्त्री ग्रह से युक्त स्त्री नवांशक में हो तो प्रथम पुत्री प्राप्ति योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : शुक्र, बुध

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपको पहली संतान कन्या हो ऐसा प्रतीत होता है ।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्दार्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 12/श्लो.-8 ॥

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है ।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है ।

दत्तकपुत्रप्राप्ति योग

दत्तात्मजः स्यादुदयास्तनाथसम्बन्धहीनो विबलः सुतेशः ।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 12/श्लो.-8 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश निर्बल हो और लग्नेश तथा सप्तमेश में से कोई संबंध स्थापित न हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है ।

योग कारक ग्रह : शनि, सूर्य, बुध

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप दत्तक पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे, ऐसा प्रतीत होता है ।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते ।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभागभवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ॥

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है ।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यग्रहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे ।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है ।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा । ऐसा प्रतीत होता है ।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है ।

योग कारक ग्रह : मंगल, शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : केतु,गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभागभवेत् ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-40 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ॥
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-62 ॥

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र,बुध,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरान्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

”केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहर्गजकेसरीति ।
दृष्टे सितार्थेन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ।।”

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग- प्रथम विधि

”अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ।।”

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु,शनि

योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्राम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

उत्तमवर्ग योग

”नीरोगतामुत्तमवर्गयातः ।।”

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शुक्र,शनि

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

वेशि योग

”धनखेटैर्वेशी दिनेशात्”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वेशि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

